ओ३म्

पूज्य गुरुवर्य
श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी

महर्षि

पाणिनि-प्रभा

महीयसी संस्थापिका
डॉ० प्रज्ञा देवी जी

महीयसी संस्थापिका
अनुजा-आचार्या मेधा देवी

सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,११३	संयुक्तांक अक्टूबर–दिसम्बर, २०१२	वर्ष ६, अंक–४	कार्तिक–पौष, वि.सं. २०६९

सम्पादिका
आचार्या नन्दिता शास्त्री चतुर्वेदी
मो०- 9235539740

◆

सहसंपादिका
डा० प्रीति विमर्शिनी
मो०- 9235604340

◆

प्रकाशक
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
पो०- महमूरगंज, तुलसीपुर,
वाराणसी– 221010 (उ0प्र0)
फोन : (0542) 6544340

◆

पत्रिका सदस्य
वार्षिक : 150/-
आजीवन : 1500/- (दस वर्ष)

प्रभा–रश्मयः

1. **वेद-वाणी–** हम अमृत धाम के अधिकारी बनें–– आचार्या नन्दिता शास्त्री 2–4
2. **सम्पादकीयम् –** जब जगे तब सबेरा – आचार्या नन्दिता शास्त्री 6–8
3. **इतिवृत्तम् –** – डा. प्रीति विमर्शिनी 9–12
4. **माँ की देन–** – डॉ. प्रज्ञा देवी 13–15
5. **एकाधिकार तोड़ता मन्त्रोच्चार –** – निराला 16–19
6. **सुगम चिकित्सा –** – डा. अजीत मेहता 20-22
7. **हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र –** – आचार्य हरिहर पाण्डेय 23-27
8. **संस्कार शाला** – आचार्या नन्दिता शास्त्री -28
8. **हम भारत से क्या सीखें –** – प्रो. मैक्समूलर 29–31
9. **1857 की क्रान्ति का जनक –** – जयंत राव कुलकर्णी 32–34
10. **स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका –** आशा रानी व्होरा 35–37
11. **अर्जुनरावणीयम् –** – डा. विजयपाल शास्त्री 38–40

◆

यह पत्रिका **sangamanee.com** पर आनलाईन उपलब्ध है।

वेद-वाणी

हम अमृत धाम के अधिकारी बनें–

स इत्तमोऽवयुनं ततन्वत् सूर्येण वयुनवच्चकार।
कदा ते मर्त्ता अमृतस्य धामेयक्षन्तो न मिनन्ति स्वधावः॥

(ऋ. 6/21/3)

यह मन्त्र ऋग्वेद के जिस सूक्त का है उसका देवता इन्द्र है। इससे पूर्व मन्त्र में स्पष्ट रूप से कहा है– **तमु स्तुषे इन्द्रं यो विदानो गिर्वाहसं गीर्भिर्यज्ञवृद्धम्**। अर्थात् हम उस इन्द्र की स्तुति करते हैं जो सब कुछ जानता है जो वेदवाणी के द्वारा प्राप्तव्य है तथा जो यज्ञ से बढ़ा हुआ है। इस प्रकार प्रकरणानुसार इस मन्त्र में **सः इत्** का अर्थ हुआ उसी इन्द्र ने इस संसार में (ततन्वत्) फैले हुए (अवयुनं) प्रज्ञा और कान्ति से रहित (तमः) अन्धकार को (सूर्येण) सूर्य के द्वारा सूर्य की सृष्टि कर (वयुनवत् चकार) प्रकाश से युक्त कर दिया।

इन्द्र का अर्थ है परमेश्वर जो कि परम ऐश्वर्य सम्पन्न होने से (इदि परमैश्वर्ये-रन् उणादि. 2/29) इन्द्र कहा जाता है। सृष्टि के आदि में जब इस धरती पर सर्वत्र अन्धकार फैला हुआ था, सब कुछ तम से आच्छादित था– **तम आसीत्तमसा गूढम् अप्रकेतम्** (ऋ. 10/129/3) कुछ भी सूझता नहीं था, किसी की परछाईं भी नहीं दिखती थी, सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार था, मनु महाराज के शब्दों में–

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम्।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः॥

(मनु. 1/5)

सर्वत्र गहन अन्धकार प्रसृत (पसरा हुआ) था जैसे सब प्रसुप्त गाढनिद्रा में लीन हों। प्रकृत मन्त्र में इस स्थिति को दर्शाने के लिये अवयुनं तमः शब्द का प्रयोग किया है। वयुन का अर्थ महर्षि देव दयानन्द प्रज्ञान और कर्म करते हैं। महर्षि यास्क– **वयुनं वेतेः कान्तिर्वा प्रज्ञा वा** (निरु. 5/3/48) अर्थात् वयुन शब्द वी धातु से (उनन् प्रत्यय करके) सिद्ध होता है जिसका अर्थ कान्ति और प्रज्ञा (प्रज्ञान) है। महर्षि पाणिनि ने वी धातु के पाँच अर्थ बताये हैं– गति, व्याप्ति, प्रजनन (उत्पत्ति) कान्ति, असन (फेंकना) खादन (खाना-भोजन)। तो इनसे रहित जो सृष्टि थी उसको परमेश्वर ने कान्तिमय शोभा से युक्त दृश्यमान गतिमान्

और प्रज्ञावान् बना दिया यह अर्थ हुआ। वह कैसे? तो उत्तर दिया– (सूर्येण) सूर्य के द्वारा। कारण यह सूर्य ही सबकी सम्पूर्ण चराचर जगत् की आत्मा है– **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च** (ऋ.1/115/1)। सूर्य का अर्थ यहाँ द्युलोकस्थ सूर्य भी है और वेदज्ञानरूपी सूर्य भी। द्युलोकस्थ सूर्य जहाँ भौतिक अन्धकार को दूर करता है वहीं वेदरूपी सूर्य हमारे अज्ञानान्धकार को। द्युलोक में निरन्तर धावमान (दौड़ता हुआ) यह सूर्य सभी देवों के मध्य अत्यन्त शोभायमान होकर परमेश्वर की व्यवस्था में स्वयं प्रकाशमान रहता है– **विश्वेषां त्मना शोभिष्ठमुपेव दिवि धावमानम्** (ऋ. 8/3/21) जिसकी शोभा को एक बच्चा भी प्रतिदिन प्रातः सायम् देख सकता है। इसी प्रकार इस पिण्ड (शरीर) में स्थित द्युलोक (मस्तिष्क) में भी यह सूर्य (ज्ञान) सभी देवों (इन्द्रियों) के मध्य अत्यन्त शोभिष्ठ व स्वयं प्रकाशमान है।

वस्तुतः इन देवों का भी देव सूर्यों का भी सूर्य उनको प्रेरणा देने वाला (सु ईरणः निरु. 2/4/14), गति देने वाला (सु अरणः), प्रकाशक (स्वृतो भासा) तो वह परमेश्वर ही है– **तमेव भान्तम् अनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति** (कठो. 5/15)। वह परम प्रभु स्वयंभू है। यहाँ मन्त्र में उसे **स्वधावः** कहा है अर्थात् जो स्वयं धारण करने की शक्ति सामर्थ्य से युक्त है। उसका सम्पूर्ण ज्ञान, बल, कर्म स्वाभाविक है– **स्वाभाविकी ज्ञानबालक्रिया च** (श्वे.उ. 6/8) मन्त्र में उसे सम्बोधित करते हुए कहा है कि– हे स्वधावः! (वयं मर्ताः) हम मरणधर्मा मनुष्य (ते अमृतस्य धाम) आपके अमृत धाम से स्वयं को (इयक्षन्तः– यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु– सन् + शतृ) संगत करने की इच्छा रखते हुए (कदाचिदपि) कभी भी (न हिंसन्ति) दूसरों के प्रति हिंसा का भाव नहीं रखते।

तात्पर्य हुआ परमेश्वर का अमृत धाम उसकी कृपा, आनन्द का लाभ वही प्राप्त कर सकते हैं जो उसके गुण कर्म स्वभाव को अपनाते हुए उसका उत्तम सखा (मित्र) बनने का प्रयास करते हैं। वेद कहता है– ऐ मनुष्य! तू **इन्द्रस्य युज्यः सखा** (ऋ. 1/22/19) तू उस इन्द्र परमेश्वर का योग्य सखा है तुझसे बढ़कर कोई और सखा उसका नहीं बन सकता है। सखा बनने के लिये आवश्यक है हम उस परम प्रभु के शील (स्वभाव) और व्यसन (कर्म) को अपनायें– **समानशीलव्यसनेषु सख्यम्**। वह परम प्रभु पक्षपात से रहित उदारता से युक्त है हमें भी इस स्वभाव को अपनाना होगा तभी हम सबको अपना बना सकेंगे। वह यदि दयालु है तो सबके लिये प्राणिमात्र के लिये और न्यायकारी है तो वह भी सबके लिये। परमेश्वर के इस व्रत का स्वभाव का पालन ब्रह्माण्ड के सभी अग्नि जल तेज वायु आदि देव करते हैं। वेद कहता है–

यस्य व्रते पृथिवी नंनमीति
यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति।
यस्य व्रते ओषधीर्विश्वरूपाः
स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ॥

(ऋ. 5/83/5)

जिसके व्रत में यह पृथिवी बार-बार उसका नमन करती है जिसके व्रत में मनुष्य को छोड़कर अन्य सभी प्राणी घूम रहे हैं जिसके व्रत में ओषधियाँ विश्वरूप को धारण कर सबको तृप्त कर रही हैं, हे पर्जन्य! आप भी उसी के व्रत में इस धरती पर जल बरसाकर सभी को सुख देते हो।

सच तो यह है आपके उस व्रत को भंग करने का साहस किसी में नहीं है। इसलिये ऐ मनुष्यो! तुम भी यदि उसके व्रत का स्वभाव का अपने जीवन में अनुपालन करोगे तो सुखी रहोगे। वेद कहता है– जिसको तुम अपना बना लेते हो वह सिद्ध हो जाता है। वह जीवन में रुकता नहीं वह पराक्रमी बन जाता है, वह वृद्धि को प्राप्त करता है उसे पाप कभी व्यापता नहीं।

यस्मै त्वमायजसे स साधत्यनर्वा
क्षेति दधते सुवीर्यम्।
स तूताव नैनमश्नोत्यंहतिरग्ने
सख्ये मा रिषामा वयं तव॥

(ऋ. 1/94/2)

हे प्रभो! हम आपकी मित्रता से कभी वञ्चित न हों बस यही कृपा यही सद्बुद्धि बनाये रखिये। यह निश्चित है जो संयमपूर्वक रहेगा वही तेरे व्रत का अनुगामी बन सकता है, वही पुष्टि को प्राप्त कर सकता है।

असंयत्तो व्रते ते क्षेति पुष्यति।
भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते॥

(ऋ. 1/83/3)

जो यज्ञ करता है हिंसा से रहित (अध्वर = यज्ञ) होता है अपने जीवन को यज्ञ बना लेता है, प्रतिदिन सोम का सवन करता है, उषर्बुध होकर प्रातःकाल जागृत होता है, वही इस सम्पूर्ण प्रकृति का ब्रह्माण्ड की ऊर्जा का धारक, परम प्रभु का उपासक यजमान बनता है, वही उस परमप्रभु की भद्र शक्ति से युक्त होकर संसार के अज्ञानान्धकार को दूर करने में समर्थ और सहायक होता है। वही उसके अमृत मोक्ष धाम का अधिकारी बनता है। महर्षि देव दयानन्द जैसे महापुरुषों ने ऋषियों ने तपस्वियों ने उस शक्ति को शिवत्व को अमृत को अपने जीवन में अर्जित किया था।

उसे आप और हम भी प्राप्त कर सकते हैं आवश्यकता है वेद के इन वचनों को पूर्ण निष्ठा के साथ जीवन में उतारने की।

●

– आचार्या नन्दिता शास्त्री

3,4,5 मार्च, रवि,सोम,मंगल, 2013

महर्षि पाणिनि स्मारक प्रज्ञा-मेधा मन्दिर

सभागार का उद्घाटन

आगामी 3 मार्च रविवार, पाणिनि कन्या महाविद्यालय में नवनिर्मित **महर्षि पाणिनि स्मारक प्रज्ञा-मेधा मन्दिर सभागार** का उद्घाटन व निर्माण में सहयोगी **विशिष्ट दानदाताओं का अभिनन्दन** सम्मान्य गणमान्य संस्कृत संस्कृति प्रेमी बन्धुओं की उपस्थिति में होना सुनिश्चित किया है।

नवम दीक्षान्त समारोह

4 मार्च सोमवार, को व्याकरण, निरुक्त, दर्शनादि का अध्ययन पूर्ण करने वाली 11 कन्याओं का **नवम दीक्षान्त समारोह** विभिन्न विश्वविद्यालय के कुलपतियों, विद्वानों व विभागाध्यक्षों के सान्निध्य में सम्पन्न होगा।

हीरक जयन्ती महोत्सव

5 मार्च मंगलवार, पाणिनि कन्या महाविद्यालय की संस्थापिका वेदविदुषीमणि पूज्या **आचार्या डा. प्रज्ञा देवी जी** के **75वें जन्मदिवस** की सम्पूर्त्ति पर महाविद्यालय के हितैषियों शुभ चिन्तकों की उपस्थिति में **हीरक जयन्ती महोत्सव** का आयोजन कल्पित है।

***साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय महिला छात्रावास** का निर्माण कार्य चल रहा है। जिसमें ४ तल हैं। ३ मार्च तक १ या २ तल का निर्माण पूर्ण होने की सम्भावना है आप सबका सहयोग अपेक्षित है। १ तल के निर्माण में २५ लाख व १ कमरे के निर्माण में ढाई लाख का योगदान अपेक्षित है।*

इससे पूर्व जिन्होंने इस सम्पूर्ण **निर्माण में 1 लाख तक का योगदान दिया है उनका नाम संरक्षक मण्डल के अन्तर्गत पत्थर पर अंकित करने की योजना है**। आप भी अपना योगदान **पाणिनि कन्या महाविद्यालय के [illegible] बैंक के खाता नं. 02207620000015 में भेज सकते हैं**। आपका सहयोग हमारे लिये बहुमूल्य है।

इस अवसर पर विद्यालय के सभी हितैषी, शुभ चिन्तकों दानदाताओं व महाविद्यालय की पूर्वस्नातिकाओं को सादर आमन्त्रण है।

निवेदिका–

नन्दिता शास्त्री

मो.- 09235539740

Website- www.paninikm.com, E-mail- paninikm@gmail.com

सम्पादकीयम्

जब जगे तब सबेरा –

16 दिसम्बर। दिल्ली में हुई वह गैंगरेप की घटना जिसने पूरे विश्व को हिलाकर रख दिया है जो अमानवीयता और पैशाचिकता की सभी सीमाओं को लाँघ चुका है जिसकी सारे विश्व ने निन्दा की है फिर भी हर दिन ऐसी ही घटनाऐं निरन्तर जारी हैं। सच तो यह है आज ऐसी घटनाओं की बाढ़ आ चुकी है लोग बहुत आगे बढ़ चुके हैं। जिसमें केवल दो प्रतिशत ही ऐसी घटनायें सामने आती हैं शेष दब जाती हैं या दबा दी जाती हैं कारण आज भी भारतीय जन-जीवन में ऐसी घटनाओं को शर्मनाक माना जाता है। माता-पिता परिवार के लोग इसे अपनी इज्जत समझते हैं बस यही कहा जा सकता है। अन्यथा आज की शिक्षा जहाँ संस्कारों की बात करना घोंचूपना समझा जाता है, जहाँ पुरानी पीढ़ी के लोग दकियानूस समझे जाते हैं। आज भी जहाँ बुजुर्ग महिलायें सिर पर पल्लू रखे बिना स्वयं को उघाड़ी समझती हैं वहीं आज की युवती अपनी जांघों को दिखाने और छाती खोल कर चलने में स्वयं को प्रगतिवादी समझती है। आज की पीढ़ी के सामने पुराने लोग स्वयं को बौना समझते हैं कई अर्थों में बात सही भी है आज का तीन-चार साल का बच्चा भी मोबाइल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट से खेलता है जबकि पुरानी पीढ़ी के लोग इन्हें हाथ लगाने में भी कांपते हैं पर बात संस्कारों की है। सोचना यह है कि हम कितनी भी प्रगति कर लें यदि हमारे अन्दर सही शिक्षा और संस्कार नहीं है वो परिवेश वो माहौल नहीं है जिसमें मानवता पनपती है, परस्पर त्याग व सहयोग की भावना होती है, रिश्तों की अहमियत होती है उनमें गहराई होती है।

लोग कहते थे पहले की महिलायें पढ़ी नहीं होती थीं पर कढ़ी होती थीं। उनमें संस्कारों की सुगन्ध होती थी उनके परिवारों में मर्यादाओं के फूल खिलते थे। हमने वृद्धों को नकार दिया जबकि चाणक्य का सूत्र कहता है– **वृद्धसेवया विज्ञानम्** वृद्ध सेवा से विज्ञान उत्पन्न होता है **विज्ञानेन आत्मानं सम्पादयेत्** और उस विज्ञान से आत्मनिर्माण होता है और आत्मनिर्माण (व्यक्ति निर्माण) ही परिवार समाज और राष्ट्र का निर्माण है।

यह वही देश है जिस पर दुनियाँ को नाज था जो चरित्र की कसौटी था जहाँ शिक्षा का मानक चरित्र माना जाता था जहाँ विश्व के लोग इस धरती पर चरित्र की शिक्षा प्राप्त करने आते थे।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

(मनु. 1/139)

मनु महाराज का यह उद्घोष सर्वथा सत्य था। स्वयं हमारी आचार्या (डा. प्रज्ञा-मेधा देवी) जी कहा करती थीं– बेटा! पढ़ाई दो पैसा कम करना चलेगा पर चरित्र के साथ कोई समझौता नहीं। यहाँ शिक्षा अष्टांग योग पर आधारित थी बालक को सत्य की डोरी से बाँधकर धर्माचरण की शिक्षा तथा ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी जाती थी। यहाँ माता-पिता बच्चों को परस्पर सम्मान करना सिखाते थे बड़े भाई को पिता के समान दर्जा दिया जाता था।

रामायण की वह घटना आज भी हमारे लिये मानक है– जब श्रीराम भगवती सीता के साथ 14 वर्ष के वनवास के लिये निकलते हैं लक्ष्मण भी साथ हैं। लक्ष्मण अपनी माता सुमित्रा का अन्तिम चरणस्पर्श करने जाते हैं उस समय माता सुमित्रा विह्वल होकर अपने पुत्र लक्ष्मण को यह आश्वासन व सन्देश देते हुए कहती हैं–

रामं दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम्।
अयोध्यामटवीं विद्धि गच्छ तात यथासुखम्॥

(अयो. वा.रा. 36/8)

अर्थात् ऐ पुत्र लक्ष्मण! तुम भैया के साथ जंगल में जा रहे हो जाओ! सुखपूर्वक जाओ, और याद रखना! तुम्हारे पिता दशरथ सदा तुम्हारे साथ हैं तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम के रूप में, मैं तुम्हारी माता भी तुम्हारी वात्सल्यमयी भाभी सीता के रूप में सदा तुम्हारे पास हूँ और जब ये दोनों तुम्हारे साथ हैं तो जंगल में भी मंगल हो जायेगा, जंगल ही तुम्हारे लिये अयोध्या का राजमहल बन जायेगा। इस सम्मान जनक मर्यादा का पालन सभी भाई परस्पर सदा से करते आये थे तभी जब रावण सीता का अपहरण करके ले गया, रास्ते में सीता अपने आभूषणों को मार्ग दिखाने के लिये फेंकती गई जिसे उठाकर जब लक्ष्मण से उन आभूषणों की पहचान कराने की बात आई तो लक्ष्मण कहते हैं–

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥

(वा.रा. किकिन्धा काण्ड 5/19)

अर्थात् मैं माता सीता के कुण्डल केयूर आदि को नहीं पहचानता हाँ! उनके द्वारा पैर की अंगुलियों में धारण किये उनके नूपुर बिछुये को जानता हूँ क्योंकि मैं नित्य उनका चरण स्पर्श करता था। यह थी हमारी शिक्षा और संस्कृति।

यह वही देश है जहाँ स्त्रियों के सम्मान में पुरुषों को नसीहत देते हुए कहा जाता था कि–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥

(मनु. 3/56)

जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का वास होता है इसलिये यदि तुम इस धरती पर देवों की प्रतिष्ठा चाहते हो, स्वयं को देव कहलाना चाहते हो तो नारियों का हृदय से सम्मान करो। याद रखना! जहाँ नारियों का सम्मान (पूजा) नहीं होता वहाँ कोई भी क्रिया फलीभूत नहीं होती। आज घर-घर में विद्यमान देवतुल्य माता-पिता का सम्मान करना लोगों ने छोड़ दिया, देवी स्वरूपा माँ बहन बेटी पत्नी की इज्जत को भी धूल चटा दिया और घर से बाहर पूजा सामग्री लेकर देवी-देवता की दुकान लगाकर बैठ गये पूजा को भी एक दुकानदारी के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। अपने यहाँ संस्कृत के चार लाइन के श्लोकों में भी कितनी ऊँची बात होती थी।

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः॥

इस श्लोक में पराई स्त्री को माँ के समान, पराये द्रव्य को मिट्टी के ढेले के समान, सभी प्राणियों को अपनी आत्मा के समान जो देखता है वही पण्डित होता है, यह कहा है। इस छोटे से श्लोक में आचार-विचार की चरित्र की सारी शिक्षा दे दी पर केवल श्लोक रटने से भी कुछ नहीं होता। इसी के लिये गुरुकुल होते थे जहाँ दुनियादारी गृहस्थी की बातें छोड़कर बच्चे को संयम नियम सदाचार के साँचे में ढाला जाता था। हमारे देश में विद्वान् होना बड़ी बात नहीं थी जो शास्त्रज्ञ होते थे उन्हें तो मात्र शिष्ट कहा जाता था। किन्तु **यस्तु क्रियावान् स एव विद्वान्** जो उन शास्त्रों पर चलता था क्रियावान् आचरणशील होता था वही विद्वान् (जानानः) कहा जाता था। और ऐसे विद्वान् तपस्वी का सर्वत्र सम्मान होता था।

आज की शिक्षा से संस्कृत का सफाया हो चुका है। सरकारी विभाग ने तो उसे एक राष्ट्रद्रोह फैलाने वाला विषैला डंक जहरीली बेल समझकर जन सामान्य से दूर करने के लिये स्कूल कॉलेजों से संस्कृत विषय को ही हटा दिया है। यद्यपि बुद्धिजीवी शिक्षाविद् हमेशा से ही शिक्षा में आमूलचूल परिवर्त्तन की बात करते आ रहे हैं पर जब जगे तब सबेरा।

आज आवश्यकता है पहली कक्षा से लेकर विभिन्न कॉलेज, यूनिवर्सिटी स्तर तक नैतिक शिक्षा के अध्यापक की। जो विभिन्न कोणों से माध्यमों से उन्हें चरित्र का महत्त्व, मानवीय दृष्टिकोण, जीवन की दिशा, जीवन के उद्देश्य, जीवन का मूल्य, पारस्परिक सम्बन्ध, संस्कारों के बारे में बतायें। आज न केवल कन्याओं को संस्कारित करने की आवश्यकता है अपितु उससे कहीं अधिक बालकों को सुसंस्कृत बनाने की आवश्यकता है तभी हमारा समाज मानव समाज बन सकता है।

●

– आचार्या नन्दिता शास्त्री

इतिवृत्तम्

– डा. प्रीति विमर्शिनी

महर्षियों ने स्वाध्याय एवं योग का जीवन में महत्त्व बताते हुए इन दोनों को ही जीवन के चरम लक्ष्य का साधन बताया है। तभी महर्षि पतञ्जलि ने योग दर्शन में यदि– **स्वाध्यायादिष्टदेवता सम्प्रयोगः** (यो.द. 2/44) अर्थात् स्वाध्याय वेदादि मोक्षविषयक शास्त्रों के पठन-पाठन, प्रणव तथा गायत्री आदि मन्त्रों के अर्थपूर्वक जप (**स्वाध्यायो वै ब्रह्मयज्ञः**) से इष्ट देवता ईश्वर, वैदिक विद्वान् योगी आदि धार्मिक महापुरुषों के साथ सम्प्रयोग सम्बन्ध होता है, जिससे विविध उत्तम कार्य सम्पन्न होते हैं। इस सूत्र के माध्यम से स्वाध्याय को ईश्वर साक्षात्कार में हेतु माना है वहीं– **तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्** (यो.द. 1-3) = योग के द्वारा चित्तवृत्ति के निरोध हो जाने पर जीवात्मा की परमात्मा के स्वरूप में अवस्थिति हो जाती है। जिससे परमात्मानुभूति परमात्मा का प्रकाश होता है। इस सूत्र के द्वारा योग को परमात्मप्राप्ति का परम साधन बताया है इस प्रकार स्वाध्याय और योग दोनों ही परमात्मप्राप्ति के साधन हैं। **स्वाध्याययोगसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते** और यही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, पाणिनि आश्रम की स्वाध्यायरत ब्रह्मचारिणियाँ भी योगपथ का अवलम्बन कर आध्यात्मिक योगमयी प्रवृत्ति का विकास करें जिससे सभी कन्यायें शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास करती हुई जीवन के चरम लक्ष्य, शाश्वत सुख मोक्षानन्द की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकें एतदर्थ विद्यालय परिसर में विद्यालयीय दिनचर्या के अनुसार प्रातः छः से सात बजे तक ध्यान योगासन एवं प्राणायाम का अभ्यास प्रतिदिन होता ही है पुनरपि मध्य-मध्य में ज्ञानवर्धन, अभ्यास परिपक्वता एवं दिशा निर्देश तथा अन्य नगरवासियों के कल्याणार्थ उच्चकोटि के विद्वान् स्वामी संन्यासियों के निर्देशन में वाग्वर्धिनी सभा, निबन्ध भाषण प्रतियोगिता तथा योग शिविरों का आयोजन होता रहता है।

इसी क्रम में 11 नवम्बर को दीपावली एवं ऋषि निर्वाणोत्सव को संयोजित करते हुए **श्रद्धाञ्जलि सभा** का आयोजन हुआ जिसमें पूर्वमध्यमा से आचार्य कक्षा तक की सभी कन्याओं ने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक मन्तव्यों एवं सिद्धान्तों पर कुशलतापूर्वक विचार रखते हुए अपनी वक्तृता का प्रदर्शन किया। तथा इस संगोष्ठी की महत्ता को अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति से गौरवान्वित किया संस्कृत एवं आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् **डॉ. सुद्युम्नाचार्य**, **डॉ. ज्वलन्त**

कुमार शास्त्री एवं **डॉ. ब्रह्मानन्द चतुर्वेदी** ने। संगोष्ठी के अन्त में सभी विद्वानों ने ऋषिवर के विविध अज्ञात पहलुओं से कन्याओं को परिचित कराया तथा कन्याओं की वक्तृत्व कला को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। अन्त में सभी कन्याओं को पुरस्कार स्वरूप ''**ध्यान योग प्रकाश**'' पुस्तक प्रदान की गई।

इसी क्रम में 28 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक उत्तराखण्ड देवभूमि हरिद्वार से पातञ्जल योगधाम के संचालक **पू. स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती** के पावन सान्निध्य में पञ्च दिवसीय ध्यान योग शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें कन्याओं ने तथा अन्य नगरवासियों ने पर्याप्त लाभ ग्रहण किया। पू. स्वामी जी ने सभी को बड़े ही सुगम रीति से योग के महत्त्व को बताते हुए प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा एवं ध्यान का अभ्यास कराया। ध्यान के समय जो अलौकिक दिव्य अनुभूति होती थी उसे बस यही कहा जा सकता है– **न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा।** अनेक ब्रह्मचारिणियों ने नियमित धारणा ध्यान आदि करने का संकल्प लिया।

इस शिविर का समापन 2 दिसम्बर को **गायत्री महायज्ञ** के साथ हुआ। इस गायत्री महायज्ञ में नगर के जिन गणमान्य सुप्रतिष्ठित सदस्यों ने यजमान बनकर अपनी आहुतियाँ प्रदान कीं उनमें प्रमुख थे– दैनिक जागरण के सम्पादक **श्री वीरेन्द्र गुप्त** सपत्नीक तथा उनके ही सुपुत्र वाराणसी के प्रख्यात चिकित्सक **डॉ. हेमन्त कुमार गुप्त**, **श्रीमती अरुणा रमण** सपरिवार, भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता **श्री महेन्द्र कुमार सिंह**, जय श्रीकृष्ण संस्था के संस्थापक **श्री संजीव कुमार अग्रवाल** व **श्री निशिकान्त भटनागर**, नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति **श्री अशोक कुमार गुप्ता** (कर्णघण्टा) रामनगर से **श्री देव भट्टाचार्य**, गाजियाबाद से **श्रीमती मीरा गैरोला** आदि।

आज के इस शुभ अवसर पर ही **श्री वीरेन्द्र गुप्त जी** द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि से पाणिनि-प्रज्ञा अनुसन्धान केन्द्र में निर्मित प्रकोष्ठ का उद्घाटन भी सभी पारिवारिक सदस्यों की उपस्थिति में तथा स्वामी जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति के अनन्तर यज्ञ की ब्रह्मा **आचार्या नन्दिता शास्त्री जी** ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जन समुदाय को अपनी भारतीय यज्ञ– संस्कृति को अपनाते हुए प्रतिदिन पञ्च-महायज्ञों को करने का संकल्प कराया। पू. स्वामी दिव्यानन्द जी ने योग एवं अध्यात्म के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रभु भक्ति भी नशा है जिसको यह एक बार चढ़ा वह कभी उतरता नहीं और उस मानव का जीवन धन्य हो उठता है फिर संसार के अन्य सभी क्षणिक सुख उसके आगे फीके हो जाते हैं। अध्यात्म विद्या अतीव सूक्ष्म एवं गहन है जिसे सब प्राप्त नहीं कर सकते इसको प्राप्त करने के लिये अष्टांग योग द्वारा, यम नियमों के पालन द्वारा उसका अधिकारी बनना

पड़ता है। प्राचीन काल में इस विद्या के प्रायः सभी अधिकारी होते थे। यह शिक्षा भारतवर्ष की धरोहर है यहीं से सम्पूर्ण विश्व में फैली है किन्तु आज इस शिक्षा का सर्वथा अभाव है स्कूल कॉलेजों में ये शिक्षायें नहीं दी जातीं इसलिये आज के नवयुवक इस अध्यात्म योग विद्या से विमुख हो रहे हैं। फलस्वरूप अनेक दुर्गुणों से युक्त होते हैं जिससे समाज दूषित भ्रष्टाचार एवं अराजकता का शिकार हो रहा है। अतः इस योग विद्या का अध्ययन अध्यापन सर्वत्र होना चाहिये।

अन्त में गाजियाबाद से पधारे **डा. वीरपाल विद्यालंकार जी** ने ''यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'' के अनुसार विश्वशान्ति, विश्वकल्याण के हेतु होने से मानव द्वारा सम्पादित कर्मों में यज्ञ विश्व का श्रेष्ठतम कर्म है इत्यादि यज्ञ की व्यापकता बताते हुए विद्यालय द्वारा सम्पादित एवं सञ्चालित हो रहे कार्यों पर प्रकाश डाला तथा वर्त्तमान समय में ऐसे विद्यालयों की उपयोगिता सिद्ध करते हुए सभी को विद्यालय का सर्वविध सहयोग करने हेतु प्रेरित किया। इस प्रकार ध्यान योग शिविर एवं गायत्री महायज्ञ पूर्ण भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

सम्मान्य सुधीवृन्द!

यह सर्वविदित है कि अक्टूबर नवम्बर एवं दिसम्बर ये तीनों मास मौसम की अनुकूलता के कारण आर्य समाज के वार्षिकोत्सवों से अत्यधिक व्यस्त रहते हैं अपनी भी व्यस्ततायें उसी प्रकार रहीं। विद्यालयीय अध्ययनाध्यापन, पाणिनि मन्दिर निर्माण तथा छात्रावास निर्माणादि कार्यों की व्यस्तता एवं व्यवस्थाओं के मध्य बाहर के वेद प्रचारादि कार्य भी सम्पन्न होते रहे। जिसमें उल्लेखनीय 18 से 20 नवम्बर, लाल डिग्गी आर्य समाज गोरखपुर का वार्षिकोत्सव शास्त्री कक्षा की **ब्र. रजिता** के ब्रह्मत्व में सरिता, सावित्री एवं विजया। 20 से 22 नवम्बर आर्य समाज डबरा ग्वालियर **डॉ. प्रीति विमर्शिनी** के ब्रह्मत्व में कौमुदी नन्दनम् एवं श्रीतेजा नन्दनम्। 23-25 नवम्बर महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल दुर्गाकुण्ड वाराणसी तथा 14 से 16 दिसम्बर जनता जनार्दन इण्टर कॉलेज मिर्जापुर **सरला शास्त्री** के ब्रह्मत्व में नीलम, साधना, नूतन, सुधा, सावित्री, विजया। 20-23 दिसम्बर, आर्य समाज भिलाई सेक्टर-6 **डॉ. प्रीति विमर्शिनी** के ब्रह्मत्व में स्नेहा एवं किरण। 21 से 23 दिसम्बर आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी **प्रियङ्का शास्त्री**। 14-16 दिसम्बर आर्य समाज गान्धीधाम कच्छ में **आचार्या विदुषी नन्दिता शास्त्री** के ब्रह्मत्व में उमा भारती, विद्योत्तमा, अर्चा, मनीषा तथा आपके ही ब्रह्मत्व में अहमदाबाद में स्व. **श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव जी** के सुपुत्र **श्री सत्यव्रत-प्रतिभा श्रीवास्तव जी** के नवनिर्मित गृह में 24 दिसम्बर से 29 दिसम्बर तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ इसके अतिरिक्त अनेक विवाह संस्कार, तिलकोत्सव, मंगलाचरण तथा स्थानीय यज्ञ भी सम्पन्न होते रहे।

सुधी पाठकवृन्द! कन्याओं के परीक्षा सम्बन्धी पाठ्यक्रम, वैदिक सिद्धान्त, व्याकरण के सर्वोच्च ग्रन्थ महाभाष्य निरुक्त आदि के साथ-2 आधुनिक विषय– विज्ञान, कम्प्यूटर, अंग्रेजी, गणित आदि सभी को पूर्ण कराते हुए बाहर के प्रचारादि कार्यों को सीमित अवधि एवं सीमित साधनों के अन्तर्गत कराना सामान्य बात नहीं। इस सब के लिये एक सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित चिन्तन की आवश्यकता होती है जिसे हम सबको सम्पादित करना होता है। इन सबसे आप विद्यालयीय प्रगति एवं सतत गतिशीलता का आकलन कर सकते हैं। तथा प्रत्यक्षीकरण आगामी मार्च को होने वाले महोत्सव में कर सकते हैं जिसमें आप सभी आमन्त्रित हैं।

महानुभाव!

आगामी 3,4,5 मार्च, **पाणिनि मन्दिर सभागार** के उद् घाटन को ध्यान में रखते हुए मन्दिर का निर्माण कार्य भी तीव्रगति से चल रहा है। उधर **अन्तर्राष्ट्रीय महिला छात्रावास** को भी पूर्ण कराने का विचार है जिससे आगन्तुक महानुभावों के ठहरने की व्यवस्था हो सके अतः पलम्बरिंग बिजली फिटिंग आदि का कार्य चल रहा है। उत्सव तक सम्भवतः एक या दो फ्लोर पूर्ण हो जाये। सभी निर्माण कार्य में अर्थ की आवश्यकता तो है ही एतदर्थ सहयोग भी शनैः शनैः प्राप्त हो रहा है। पुनरपि कुछ नाम हमारे संरक्षक मण्डल में और सुशोभित हुए हैं– जिनका उल्लेख करना चाहूँगी– **पू. स्वतन्त्रदेव जी महाराज** झूसी, **श्री सत्यव्रत-प्रतिभा श्रीवास्तव** अहमदाबाद। इसी के साथ **श्री भागीरथी अग्रवाल** मुम्बई ने अपनी पूज्या माता **श्रीमती चन्द्रो देवी** पिता **श्री चन्दूलाल जी अग्रवाल** की स्मृति में एक फोन पर ही छात्रावास के दो कमरों हेतु राशि प्रदान की। आप सबको पुनः बताती चलूँ कि एक लाख अथवा एक लाख से अधिक देने वाले दानी महानुभाव हमारे इस संरक्षक मण्डल में जुड़ते जायेंगे और उनका नाम पत्थर पर अंकित हो रहा है।

इसके साथ ही आर्य समाज दातार रोड जूनागढ़ गुजरात, आर्य समाज कुबेर नगर (गुजरात) श्री नरसिंह भाई सोरठिया गाँधीधाम, श्रीमती सत्यंवदा श्रीवास्तव अहमदाबाद, श्रीयुत भरत भाई अग्रवाल अहमदाबाद, श्री ओम् प्रकाश आर्य हापुड़, आर्य समाज धूलिया, श्री आदित्य आर्य धूलिया, श्री एम.डी. जोशी अमरावती, डॉ. एम. के. खण्डूजा भिलाई, श्रीमती सरोज बहल भिलाई, श्री कपिल उप्पल भिलाई, चि. अनुराग मल्होत्रा भिलाई, श्री संजीव भल्ला भिलाई, श्रीमती डॉ. ओम् कुमारी तायल, श्री महेश चन्द्र तायल भिलाई, श्री अर्णव पुरंग भिलाई, श्रीमती सन्तोष प्रभा भगोलीवाल भिलाई, श्रीमती इन्दु अग्रवाल भिलाई आदि का सहयोग उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त अन्नपूर्णा मन्दिर ट्रस्ट की ओर से विद्यालयीय सभी कन्याओं के लिये इस वर्ष गरम सूट सिलवाकर प्रदान किये गये। परमपिता परमेश्वर आप सभी को परोपकार की भावना से युक्त रखे तथा स्वस्थ, दीर्घ एवं यशस्वी जीवन प्रदान करे। यही सम्पूर्ण विद्यालय परिवार की कामना है। ●

माँ की देन

– डा. प्रज्ञा देवी

[*यह लेख **'उरुधारा नारी'** पुस्तक से उद्धृत है। नारियों से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर वैदिक दृष्टिकोण को दर्शाती यह पुस्तक पाणिनि कन्या महाविद्यालय की संस्थापिका वेदविदुषीमणि **पू. आचार्या डा. प्रज्ञा देवी जी** द्वारा लिखित लेखों का संग्रह है। इस पुस्तक की बहुत दिनों से हमारे पाठक प्रतीक्षा कर रहे थे। लगभग 28 वर्ष बाद पुनः मुद्रित होकर यह एक मास के अन्दर उपलब्ध हो जायेगी। – **सम्पा०***]

सन्तान के निर्माण में माता की भूमिका यद्यपि सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है तथापि पुत्री का निर्माण लोक एवं परलोक दोनों के लिये सुखावह है। उत्तम शिक्षण, गृह विज्ञान, हस्त कला कौशल के साथ-साथ सुयोग्य माता अपनी प्यारी पुत्री के बढ़ते हुये वयःक्रम के अनुसार बड़ी चतुरता से उसका मनोवैज्ञानिक अध्ययन करती हुई जिन दृढ़ किन्तु मृदुल व्यावहारिकताओं को अपनी सूक्ष्म बुद्धि से उपस्थित करती है मानों माता की वही सूक्ष्म दृष्टि पुत्री को उत्पथ पर जाने से रोकने के लिये उसका रक्षा कवच बन जाती है। माता के पुत्री के प्रति किये गये इस मनोवैज्ञानिक अध्ययन का प्रभाव पुत्री के वर्त्तमानकालिक दिशा-निर्देश तक ही सीमित नहीं रहता अपितु इससे पुत्री रूपी भावी सुयोग्य माता का पथ निर्मित हो जाता है। विवाह के अनन्तर पराये घर में जाने पर ऐसी सुदक्षा बेटी विकट से विकट समस्याओं के उपस्थित हो जाने पर अपनी धैर्यवती मेधाविनी माता को आदर्श प्रतिमान मानकर हँसते-हँसते उन समस्याओं का समाधान निकाल लेती है। वस्तुतः बेटी ने सतवन्ती सीता को तो देखा नहीं होता जिससे उस अप्रत्यक्ष का अनुकरण करे वह तो पूर्णकामा अपनी माँ की आकृति में ही सीता-दमयन्ती आदि आदर्श-चरित्र नारियों के प्रतिबिम्ब को देखती है। वही उसका प्रतिमान होता है। वह जैसे ही कुछ बड़ी होने लगती है वैसे ही माता के जीवन में आये ऊहापोहों को बड़ी शीघ्रता से समझने लगती है और उसके हृदय में माता के अपार धैर्य सहनशीलतादि गुण अमिट प्रभाव डालने लगते हैं, बस; यही माता के द्वारा पुत्री को दिया हुआ रसायन बनता है, गुण ग्रन्थि हो जाता है जिसका उपयोग वह अपने भावी जीवन में **शिवा, सुमना, सुवर्चा, अरेपसा** (निष्पाप) पत्नी बनकर एवं आकाश भी जिसके सामने नम जाये ऐसी साहसी माता बनकर करती है।

यौवनावस्था को प्राप्त होते ही प्रायः प्रत्येक पुत्री की यही मानसिकता होती है कि वह भी माता के बनाये इस सुखी संसार का दूसरा ढाँचा तैयार करेगी, सबको इसी प्रकार अपने त्याग भाव से सुखी सन्तुष्ट रखते हुये परिवार में समादृत होगी, इस प्रकार पुत्री का भावी पथ माता द्वारा ही बनता है। प्रायः प्रत्येक माता-पिता कन्या को पढ़ा लिखा एवं गुण विभूषिता बनाकर **अर्थो हि कन्या परकीय एव** की उक्ति के

अनुसार यज्ञ मण्डप में बैठकर अग्नि को साक्षी देते हुये उसका दान (कन्यादान = कन्या प्रतिग्रहण) उत्तम सृष्टिक्रम चलाने के लिये करते हैं, अपने आप में वस्तुतः ऐसा ही महनीय त्याग है, जैसे एक आचार्य **तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे बिभर्त्ति** के अनुसार ज्ञान, कर्म, उपासना रूपी विद्याओं को ब्रह्मचारी में धारण कराने के लिये मानो अपने गर्भ में लेता है, अपने सन्निकट लाता है तदनन्तर उसे त्रयीविद्या से विभूषित कर उसका समावर्त्तन संस्कार कर राष्ट्र के लिये उस ब्रह्मचारी को दे देता है। निर्माण करना है और फिर उस उत्तम वस्तु का परार्थ त्याग करना है अर्थात् निर्माण परार्थ है स्वार्थ के लिये नहीं। जितनी उत्तम वस्तु का त्याग करेंगे उतना ही फल गहन सुखदायी होगा अतः पूर्ण मनोयोग से वर्षों समय लगाकर देय वस्तु का निर्माण सुयोग्य माता एवं आचार्य करते हैं। वे दान क्या करते हैं मानो पुत्री या ब्रह्मचारी के रूप में अपना सम्पूर्ण मनोरथ ही दूसरे परिवार या राष्ट्र को सौंपते हैं। पराये घर से पुत्री की प्रशंसा आये तो इहलोक धन्य हो गया तथा कर्त्तव्य कर्म पूर्ण करने से परलोक भी बन गया, यही कन्या के निर्माण का फल है। चूँकि सृष्टि की प्रक्रिया के निर्माण की आधार शिला नारी है अतः संस्कारों के बीजारोपण का कार्य अत्यन्त सावधानी एवं प्रमुखता के साथ कन्या में माता द्वारा होना चाहिये इस दृष्टि से पुत्री का सुसंस्कारित होना पुत्र से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है यह निर्विवाद है।

माता को पुत्री के निर्माण में अपनी जिस मानसिकता का अध्यारोप उस पर करना पड़ता है वह एक विलक्षण वस्तु है। शुभ संस्कारों से युक्त, धैर्यादि गुणों से परिपूर्ण ऐसी बेटी जिस समय अपना नया संसार बसाने के लिये आगे कदम रखती है उस समय वह अपने आप में पूर्ण सन्तुष्ट एवं आश्वस्त होती है। दुर्जेय एवं जटिल परिस्थितियों में भी ''मैं अपने सद्गुणरूपी हथियार से सर्वत्र सफलता प्राप्त कर लूँगी, शान्ति से मैं सबके मन को जीत लूँगी'' यह विश्वास उसे सदैव अविचल बनाये रखता है। माँ के द्वारा प्राप्त संस्कारों की इस पूँजी को जो पुत्री प्राप्त कर लेती है उसे बनावट का दोहरा जीवन जीने की आवश्यकता नहीं होती वह तो उस विजय गौरव एवं उल्लास को लिये हुये गृहस्थाश्रम में प्रवेश करती है। जैसे कोई बालक अध्यापक द्वारा किये गये होमवर्क को भली प्रकार अभिभावक की सहायता से सम्पादित करने पर विजय गौरव से अपनी कक्षा में प्रवेश करता है। कक्षा के अन्य बालकों की अपेक्षा वह अपने आपको अच्छा समझता है, सन्तुष्ट, प्रसन्न पाता है। इस प्रकार के आत्म-विश्वास से पुत्री को भर देना ही माता का मुख्य कार्य है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते समय वधू को यही आशीर्वाद समागत देवगण देते हुये कहते हैं–

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा।
ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ॥

(यजु. 6/25)

अर्थात् हे वधू! हम तुझे हार्दिक एवं मानसिक सुख के लिये आशीर्वाद देते हैं कि तू दिव्य गुण सम्पन्ना पुत्री एवं प्रतापी पुत्र को प्राप्त कर तथा इस गृहस्थरूपी यज्ञ को अपनी सद्भावनाओं से सुखप्रद बना।

यह एक तथ्य है कि आज पुत्री शिक्षा के प्रति माता की असावधानी के कारण ही विवाहित पुत्रियों को टीपटापमय बाह्य शृंगार पटार वाला दोहरा जीवन जीने के लिये बाध्य होना पड़ता है। गृहसाम्राज्ञी का परिवार की प्रत्येक कड़ी को सन्तुष्ट प्रसन्न रखना अनिवार्य दायित्व है। विचार एवं आवश्यकतायें भिन्न-भिन्न हैं- कुछ का पालन करना है, किन्हीं को कुछ देना है ऐसी जिम्मेदारियों का निर्वाह यथोचित रीति से वही वधू कर सकती है जिसने माँ की घुट्टी में उदारता, दया एवं समदृष्टि का पाठ पढ़ा हो। परिवार केवल न्याय से नहीं चलते दया से चलते हैं। न्याय तो परिवार में प्रत्येक भाई या बहिन को समान वितरण की शिक्षा देता है किन्तु दया कहती है कि ''परिवार के कमजोर घटक को अधिक सहयोग दो।'' समदृष्टि का निर्वाह बड़ी सावधानी से करते हुये निर्बल घटक के प्रति यह सहयोग बड़ी उच्चभूमि में किसी को भी खड़ा कर देता है। माता से प्राप्त शिक्षा के कारण इन्हीं सद्गुणों का अविचल विश्वास किसी भी पुत्री में होता है। छोटी-छोटी सी बातें जनमते से ही माता उपदेश एवं निर्देश के द्वारा बच्चों को देने लगती है जो उसके जीवन स्त्रोत को सिञ्चित करने लगता है। ''इस प्रकार भोजन चबा-चबा कर थाली पोछकर खाओ, बिखेरो नहीं, ऐसे चलो, बात करते समय नाक भौं व्यर्थ न सिकोड़ो, सोते समय पैर धोकर सोओ, भोजन करके तुरन्त मत सोओ, ईश्वर का ध्यान करके सोओ, प्रातः नमस्ते करो'' ये छोटी-छोटी बातें कहते-कहते जब स्वभाव में पड़ जाती हैं तो इनके बिना किये, दिनचर्या अपूर्ण लगने लगती है, यह सब जीवन का अंग बन जाता है।

इस प्रकार माता वह धुरी है जिसके इर्द गिर्द पुत्री का जीवन पल्लवित एवं विकसित होता है। माता की सुशिक्षा की उपमा अनुपमेय है क्योंकि माता मानव की **नास्ति मातृसमो गुरुः** के अनुसार श्रेष्ठ एवं प्रथम गुरु है। कष्टों को सहन करने की अपार क्षमता माता सीता ने अपनी माता **योगिनी**[1] की गोद में ही प्राप्त की थी और तभी गौरव के साथ अनुसूया माता के वन में कष्ट सहन करने का उपदेश देने पर कह दिया था कि **पाणिप्रदानकाले जनन्या मेऽनुशिष्टम्** अर्थात् गृहस्थ जीवन में साहस के साथ कष्ट सहन करने का यह उपदेश मेरी माता ने विवाह से पूर्व ही मुझे दिया था अच्छा हुआ आज आपने पुनः यह उपदेश सुनाकर मुझे उपकृत किया है इस प्रकार शुभ संस्कारों के रूप में पुत्री के लिये 'माँ की देन' अमोघ स्थिर निधि है अक्षय वट है प्रत्येक क्षेत्र में ससम्मान जीने के लिये यह उत्तम साधन है जीवन का मर्म यहीं आकर विकसित होता है तथा कर्म पूर्ण होते हैं जिसके भाग्य में यह शिक्षा गर्भ से ही प्राप्त होती है वह मानों इसी जीवन में बन और सुधर जाता है।

●

1. सीता की माँ का नाम योगिनी था इसमें शिव पुराण का प्रमाण है–
   धन्या प्रिया द्वितीया तु योगिनी जनकस्य च।
   तस्याः कन्या महालक्ष्मी नाम्ना सीता भविष्यति॥
   (पा.ख. 2/29)

तहलका

एकाधिकार तोड़ता मंत्रोच्चार

महिला विशेषांक –

– निराला

'मैं ख्याति, जयपुर की रहने वाली, 11वीं कक्षा में हूँ संस्कृत को सबसे सामर्थ्यवान् भाषा मानती हूँ भारतीय संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ संस्कृति...।

सिर्फ नाम पूछने पर इतनी बातें बताती है ख्याति, फिर तुरन्त ही शुरू हो जाती है, किसी रोक-टोक या सवाल की गुंजाइश छोड़े बगैर, आगे कहती है,'भईयाजी, आपने बहुत मंदिर देखे होंगे, लेकिन अब आप देश ही नहीं, दुनिया का अनोखा मंदिर देखेंगे, पाणिनि मंदिर नाम है इसका। पाणिनि को तो आप जानते ही होंगे, लाहौर के थे, उन्होंने ही अष्टाध्यायी लिखी था, पूरी दुनियाँ में शब्द विद्या का ऐसा प्रामाणिक शास्त्र अब तक तैयार नहीं हो सका है, अगर अष्टाध्यायी न होती तो संस्कृत भाषा जिंदा न रह पाती, व्याकरण लोकमानस की समझ से परे की चीज बनी रहती, भारत कई तरह के ज्ञान से वंचित रह जाता....'

ख्याति को बीच में टोकना पड़ता है कि अब थोड़ा मंदिर के बारे में बताओ, वह कहती है, 'देखिए, मंदिर की दीवारें, अष्टाध्यायी के चार हजार सूत्र अंकित हैं, मंदिर से सटा अनुसंधान केन्द्र और इंटरनेशनल हॉस्टल बन रहा है, मालूम है क्यों? क्योंकि अब विदेशी लोगों की बहुत रुचि है व्याकरण के सूत्र जानने-समझने में, इसीलिए वे आएंगे तो यहीं रहकर अध्ययन-अनुसंधान वगैरह करेंगे दुनिया भर में भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के दीवाने बढ़ रहे हैं और अपने देश में अंग्रेजी-अंग्रेजियत और...।'

मंदिर के बारे में जानकारी दे रही ख्याति किसी विशेषज्ञ की तरह हमें समझा रही है, मैं पूछता हूँ, 'तुम तो पक्का पंडित हो जी,' फट जवाब मिलता है 'पंडित- पंडिताइन क्या होता है? जो वेद-शास्त्र-पुराणों को जानेगा समझेगा, वही ज्ञानी है, जाति से नहीं।'

बेहद बातूनी और हाजिर जवाब ख्याति से पार पाना आसान नहीं लगता, उसका आत्मविश्वास उसके वाक्यों को और मजबूत बना रहा है, उससे बात करते हुए एक बार भी नहीं लगता कि हमारी बात उस लड़की से हो रही है जो पिछले कई साल से एक चारदीवारी की दुनिया में सिमटे उस स्कूल की छात्रा है जहाँ भौतिकवादी और उपभोक्तावादी दुनिया से सख्ती से परहेज बरता जाता है। जहाँ बदलती दुनिया की झांकी दिखाने वाले टीवी और सिनेमा जैसे माध्यमों की परछाईं तक नहीं पड़ती।

ख्याति कहती है, संस्कृत संस्कृति और व्याकरण के बारे में कोई जिज्ञासा हो तो पूछ लीजिए

भईयाजी, मैं पूछने के बजाय कहता हूँ, तुम अच्छी शिक्षिका बनोगी जवाब आता है, वह तो मैं अभी भी हूँ, आगे आईएएस बनूंगी।

यह बनारस के तुलसीपुर इलाके की एक गली में बने पाणिनि कन्या महाविद्यालय का परिसर है यहीं हमें सातवीं में पढ़ने वाली होशंगाबाद की अर्चना और हैदराबाद की मैत्रेयी भी मिलती हैं, उनमें भी उतनी ही हाजिरजवाबी और आत्मविश्वास। महाविद्यालय परिसर में घंटों गुजारने के बाद साफ होता है कि ख्याति, अर्चना और मैत्रेयी ही नहीं, आंध्र प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, असम, नेपाल आदि से आई जो 100 लड़कियाँ यहाँ रहती और पढ़ती हैं वे सब इतनी ही ऊर्जा, उत्साह और उम्मीदों से लबरेज हैं।

ख्याति जिस पाणिनि मंदिर को देश-दुनिया का खास मंदिर बताती है उसकी खासियत का आकलन तो उसके पूरा बनने के बाद होगा, फिलहाल जो महाविद्यालय 41 साल से तुलसीपुर की इस गली में चल रहा है वह कई मायनों में अनोखा लगता है, यहाँ सुबह चार बजे से रात नौ बजे तक की दिनचर्या है, सुबह चार बजे जगना, छह बजे योगासन-ध्यान, सात बजे यज्ञ, फिर वेद पाठ की कक्षा, फिर जलपान, फिर नौ से बारह बजे तक आधुनिक विषयों जैसे गणित, साइंस, भूगोल, कम्प्यूटर आदि की कक्षाएँ, फिर भोजन, इसके बाद दोपहर दो से पाँच तक संस्कृत की कक्षा और उसके बाद लाठी, भाला, तलवार, धनुष चलाने का खेल आपस में संस्कृत में ही बात होती है एक नजर में यह किसी पुरातन युग की दुनिया भी लगती है, स्कूल की आचार्या नन्दिता शास्त्री और डा. प्रीति विमर्शिनी कहती हैं कि यह आपके नजरिये पर निर्भर करता है, नन्दिता कहती हैं हमारी सोच साफ है कि यहाँ से जो लड़कियाँ निकलें वे सदियों से चली आ रही और जकड़ी हुई एक व्यवस्था को चुनौती दें वेद पाठ, कर्मकाण्ड, शास्त्रीयता और अन्य वैदिक विधाओं में पुरुषों का वर्चस्व कायम है, वह टूटे। ऐसा हो भी रहा है डा. प्रीति कहती हैं हमने पिछले चार दशक में ऐसी कई लड़कियों को तैयार किया है जो देश-दुनिया के कोने-कोने में वेद पाठ कर्मकाण्ड आदि करवाने जा रही हैं, अपना वैदिक स्कूल खोलकर लड़कियों को पुरुषों के मुकाबले तैयार कर रही हैं।

नंदिता बताती हैं कि पाणिनि कन्या महाविद्यालय नौ साल के करीब उम्र वाली लड़कियों को दाखिला देता है, देश के कोने-कोने से हर साल 20 लड़कियों को लिया जाता है यहाँ उनके लिए एमए तक की शिक्षा की व्यवस्था है, उसके बाद यह फैसला उन्हें खुद करना होता है कि वे क्या करेंगी गृहस्थ आश्रम में जाएंगी या प्राध्यापक, आईएएस, शास्त्री आदि बनेंगी, नंदिता कहती हैं यहाँ आठवीं कक्षा तक को आगे की कक्षाओं में पढ़ रही लड़कियाँ ही पढ़ाती हैं। गोशाला संचालन,

बिजली से चलने वाली आटे की चक्की चलाना, खेती करना और जरूरत पड़ने पर सभी का खाना बनाना भी वे जानती हैं स्कूल परिसर से लड़कियाँ बाहर सिर्फ तभी निकलती हैं जब उन्हें मंगलाचरण, वेदपाठ या कर्मकाण्ड के लिए बुलावा आए या किसी गोष्ठी में भाषण देने जाना हो या फिर किसी विद्वान् के साथ शास्त्रार्थ करने। अब गृहप्रवेश मुंडन जैसे कार्यों में भी लोग इन्हें बुलाने लगे हैं और इनकी व्यस्तता तेजी से बढ़ती जा रही है। काशी की गलियों से लेकर जर्मनी हॉलैण्ड स्पेन तक उनका जाना होने लगा है वे जब सस्वर वेद पाठ करती हैं या कर्मकाण्ड करवाती हैं तो लोग मुग्ध हो जाते हैं।

सहज सवाल उठता है कि क्या काशी के मठाधीश पंडितों ने कभी इस पर ऐतराज नहीं जताया कि लड़कियाँ जनेऊ वगैरह पहनकर पारंपरिक तौर पर पुरुषों के आधिपत्य वाली इस विद्या में हस्तक्षेप करें और चुनौती की तरह खड़ी हों, डॉ. प्रीति बताती हैं 'बखेड़े कम नहीं होते, कभी कहा जाता है कि पुरुषों को चुनौती देने के लिए यह सब वितंडा खड़ा किया जा रहा है जो शास्त्र विरुद्ध है, निर्णय सिंधु का हवाला देकर कहा जाता है कि जो लड़की मंत्रोच्चारण करेगी, वह पुत्रहीन हो जाएगी, वे आगे कहती हैं शंकराचार्य से लेकर कई मनीषियों ने नारी को नरक का द्वार तथा जहर जो अमृत की तरह दिखता है छोड़ने योग्य है उसी प्रकार नारियाँ हैं आदि कहा है लेकिन हम जानते हैं कि ये सारी उपमाएँ इसलिए दी गई हैं क्योंकि अपने जमाने में गार्गी, घोषा, अपाला, सूर्या, भारती, इन्द्राणी, शची जैसी महिलाएँ हुई हैं जिन्होंने पुरुषवादी ज्ञान व्यवस्था को चुनौती दी।

स्कूल कैसे शुरू हुआ उसकी एक दिलचस्प कहानी है बताते हैं कि कई दशक पहले लाहौर के रहने वाले पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु नाम के एक विद्वान् काशी में आकर बस गए थे, वे ऋषियों की प्रणाली और आर्ष वेद पाठ प्रणाली से वेदों का अध्ययन-अध्यापन करवाते थे उनका वास बनारस के मोतीझील में हुआ करता था, वर्षों पहले मध्य प्रदेश के सतना की निवासी एक महिला श्रीमती हरदेवी आर्या अपनी तीन बेटियों व एक बेटे को लेकर जिज्ञासु जी के पास आईं जिज्ञासु जी ने उन्हें शिक्षा देनी शुरू की। हरदेवी आर्या की दो बेटियाँ प्रज्ञा देवी और मेधा देवी विदुषी निकलीं दोनों ने मिलकर अपने गुरु के नाम पर अध्ययन केन्द्र शुरू किया। पहले तो वह मोतीझील में ही चलता रहा लेकिन 1971 से तुलसीपुर में आ गया। तब से यहीं चल रहा है, अब वहीं महाविद्यालय परिसर के पास ही व्याकरण के आचार्य पाणिनि के नाम पर विशाल मंदिर, अनुसन्धान केन्द्र और अंतर्राष्ट्रीय छात्रावास बन रहा है जिस पर पांच करोड़ रु० खर्च होने का अनुमान है।

सात साल की उम्र में ही यहाँ पढ़ने आई गया की डॉ. प्रीति कहती हैं कि इस महाविद्यालय को

चलाने में बहुत-सी चुनौतियाँ आईं, वे बताती हैं इसे आज तक चलाते रहना और समय के साथ बढ़ाते रहना कोई आसान काम नहीं था और न अब है लेकिन समाज के सहयोग से ही यह आगे बढ़ता रहा और इसमें नामांकन के लिए देश के कोने-कोने से अभिभावक आते हैं लेकिन हमारी मजबूरी है कि हम 100 से ज्यादा लड़कियों को नहीं रख सकते और फिर यह भी देखना होता है कि अभिभावक यह मानने को तैयार हैं या नहीं कि यदि बालिका यहाँ आई तो पहले के चार साल में उसे घर जाने की इजाजत नहीं मिलेगी, और फिर यह भी देखना होगा कि बाहर से बंद दिखने वाली इस दुनिया में वे अपनी बेटी को रखने के लिए तैयार हैं या नहीं।

जब इतना कुछ है तो सरकार से सहयोग लेने में हर्ज क्या है? जवाब में आचार्या नंदिता कहती हैं सरकार का व्यर्थ का हस्तक्षेप कभी आपको सही ढंग से चलने नहीं दे सकता इसलिए हम उस पचड़े में नहीं पड़ना चाहते, सरकारों ने कई बार कोशिश की लेकिन हम दूरी बनाकर रखते हैं हर लड़की के अभिभावक से सालाना 25 हजार रु० लेते हैं जो दे पाते हैं ठीक, नहीं दे पाते तो समाज के सहयोग से चलता है। नंदिता एक पुरानी कहावत का हवाला देते हुए आगे जोड़ती हैं राजा के अन्न पर आश्रित रहो तो वह तेज का हरण कर लेता है। ●

पाणिनि का संस्थान खड़ा है, आर्य शक्ति आह्वान से।

देश-भक्ति शुभ जगा रही है, वेद ऋचा के गान से।
दयानन्द स्वामी की छाती, उबल रही अभिमान से।।

जननी अपनी भारत माता, हम उसकी संतान हैं।
आत्म विस्मरण व्याधि लगी है, मुखर हुआ अज्ञान है।।

अखिल विश्व को राह दिखाता, देश हमारा ज्ञान से।
देश-भक्ति शुभ जगा रही है, वेद ऋचा के गान से।।

भूल गये हम क्यों अतीत को, पर संस्कृति के हामी हैं।
वेदोपनिषद् दर्शन के हम, कहाँ रहे अनुगामी हैं?

दुःखद प्रश्न फिर खड़े सामने, विरत हुआ पहचान से।
देश-भक्ति शुभ जगा रही है, वेद ऋचा के गान से।।

नित्य यज्ञ हम करें नियम से, अपने प्रभु को याद करें।
त्याग, तितिक्षा, सेवा, करुणा, से मन का अवसाद हरें।

जगत् गुरु यह भारत ही है, मातृ-शक्ति सम्मान से।
देश-भक्ति शुभ जगा रही है, वेद ऋचा के गान से।।

संस्कृत का संबंध पुरातन, संस्कृत अपनी वाणी है।
सुलभ धर्म-दर्शन होता है, ज्योति पथिक हर प्राणी है।।

पाणिनि का संस्थान खड़ा है, आर्य शक्ति आह्वान से।
देश-भक्ति शुभ जगा रही है, वेद ऋचा के गान से।।

●

अखिलानन्द पाण्डेय 'अखिल'
तुलसीपुर, वाराणसी

सामान्य रोगों की सुगम चिकित्सा

– डा० अजीत मेहता

सर्दी के कारण उत्पन्न रोग तथा गले व श्वसन संस्थान के रोगों से बचाव–

जो व्यक्ति नित्य प्रायः खाली पेट चार-पाँच तुलसी की पत्तियों को खा लेता है, वह अनेक रोगों से सुरक्षित रहता है तथा सामान्य रोग स्वतः ही दूर हो जाते हैं। सर्दी के कारण होने वाली बीमारियों में विशेष रूप से जुकाम, खाँसी, ब्राँकाइटिस, निमोनिया, इन्फ्लूएंजा, गले, श्वासनली और फेफड़ों के रोगों में तुलसी का सेवन उपयोगी है। इन पत्तियों को दो चम्मच पानी के साथ घोंटकर पीसकर लें अथवा वैसे ही चबाकर दो घूँट पानी से निगल लें।

विशेष– (1) तुलसी के प्रयोग से सर्दी छाती में नहीं उतरने पाती और छाती में उतरी हुई सर्दी कफ के रूप में बाहर निकल जाती है। छाती का दर्द भी कम हो जाता है। श्वास प्रणाली की झिल्ली पर स्वास्थ्यप्रद प्रभाव डालने में तुलसी में अद्‌भुत क्षमता है। (2) तुलसी के सेवन से ज्वर का भय जाता रहता है। निमोनिया और मलेरिया बुखार में तुलसी की पत्तियाँ तीन और काली मिर्च तीन दानों को एक चम्मच पानी में घोंटकर कुछ दिन प्रातः खाली पेट लेते रहने से अवश्य लाभ होगा।

तुलसी की चाय– अदरक, काली मिर्च-युक्त तुलसी की चाय के सेवन से साधारण बुखार, मलेरिया दूर होता है। तुलसी की चाय बनाने के लिए ताजा तुलसी की पत्तियाँ सात (अथवा छाया में सुखाई तुलसी की पत्तियों का चौथाई चम्मच चूर्ण), काली मिर्च सात (थोड़ी कूटी हुई), सूखी सौंठ का चूर्ण चौथाई चम्मच (अथवा ताजा अदरक दो ग्राम) लें। इन तीनों वस्तुओं को एक कप उबलते हुए पानी में डालकर चार-पाँच उबाल आने दें। तत्पश्चात् नीचे उतारकर दो मिनट ढक कर रख दें। दो मिनट बाद छान कर इसमें उबला हुआ दूध 100 ग्राम और एक दो चम्मच शक्कर या चीनी डालकर गरम-गरम पी लें और ओढ़कर पाँच-दस मिनट सो जाएं। इससे सर्दी का सिरदर्द, नाक में सर्दी, जुकाम, पीनस, श्वास नली में सूजन एवं दर्द ([illegible]) साधारण बुखार, मलेरिया, बदहजमी आदि रोग दूर होते हैं। इससे छाती में जमा हुआ कफ़ ढीला होकर निकल जाता है। सर्दी से हुई छाती की अकड़न और पसलियों का दर्द दूर हो जाता है। जाड़ों के दिनों में इसको लेते रहने से मनुष्य सर्दी में होने वाले जुकाम, खाँसी, बुखार और गले के रोगों से सुरक्षित रहता है।

खाँसी से बचाव–

भोजन के एक घंटे बाद पानी पीने की आदत डाली जाए तो न केवल आप खाँसी से बचे रहेंगे बल्कि आपकी पाचन-शक्ति भी अच्छी रहेगी।

फेफड़ों के रोगों से बचाव–

नए बढ़िया ताजा मुनक्का के 15 दानों को, पानी से साफ कर, रात में 150 ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातःकाल तक वे फूल जाएंगे। प्रातः बीज निकाल कर उन्हें एक-एक करके खूब चबा-चबाकर खा लें। बचे हुए पानी में थोड़ी चीनी मिलाकर या वैसे ही पी लें। एक मास तक इस प्रकार मुनक्कों का सेवन करने से फेफड़ों की कमजोरी और विषैले मवाद नष्ट हो जाते हैं। परिणामस्वरूप दमा के दौरे भी बन्द हो जाते हैं। पुरानी खाँसी, नजला, पेट की खराबियाँ दूर होती हैं। कब्ज, बवासीर, नकसीर, मुँह के छालों में लाभ होता है। मूत्र खुलकर आता है। रक्त के लाल कणों की वृद्धि होती है। रक्त शुद्धि और रक्तवृद्धि होकर बल-वीर्य बढ़ता है।

अन्य विधि– रात में इन भिगोये हुए मुनक्कों को यदि सबेरे उबालकर ठंडा किए हुए दूध में आधा पौन घंटा रखने के बाद खाया जाये तो अधिक शक्तिवर्धक सिद्ध होते हैं। इन्हें चोट लगने के पश्चात् लेने से शीघ्र ताकत आती है। केवल मधुमेह में मुनक्का का सेवन वर्जित है।

विकल्प– (1) नित्य दो चाय के चम्मच की मात्रा में शुद्ध शहद का सेवन करने वाले व्यक्ति के फेफड़े इतने मजबूत हो जाते हैं कि उसे फेफड़ों के रोग नहीं होते। मास-डेढ़ मास प्रयोग करें। रोग निवृत्ति के बाद, महज स्वाद के लिए, बिना आवश्यकता के शहद का उपयोग न करें।

विशेष– शहद के तीन विशेष गुण हैं– (1) श्वास नली से सम्बन्धित विकारों को दूर करना। (2) शरीर के मल धातुओं में से अनावश्यक सामग्री को बाहर निकाल देना। (3) समस्त नाड़ी-तन्त्र को सुव्यवस्थित रखना और समस्त धातुओं को पुष्ट करते हुए शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाना।

विकल्प– (2) **टहलने के साथ गहरी श्वास की क्रिया** करने से आप न केवल फेफड़ों के रोगों से बचे रहेंगे बल्कि सदाबहार यौवन से युक्त रहेंगे। इसके लिए प्रातः टहलते समय आपको केवल इस क्रिया का अभ्यास करना है कि जब श्वास भीतर लें तब श्वास सरलतापूर्वक नाक के अन्दर खींचे और जब श्वास छोड़ें तब मुँह से लम्बी फूंक मारते हुए बलपूर्वक अधिकाधिक श्वास बाहर निकालें। मुँह से बलपूर्वक अधिक लम्बा श्वास छोड़ने के बाद जब आप मुँह बन्द कर नाक से श्वास सहजता से भीतर लेंगे तो यह श्वास स्वतः गहरा होगा।

विशेष– (1) गहरे श्वास की क्रिया के परिणाम स्वरूप फेफड़ों द्वारा रक्तकोष तथा मस्तिष्क को अधिकाधिक आक्सीजन मिलती है तथा अवांछित जलीय और गैसीय तत्त्वों का निष्कासन होता है। इससे सम्पूर्ण शरीर शुद्ध और तरोताजा बनकर खिल जाता है। (2) आज लम्बी दौड़ की जगह टहलने और खतरों भरे भारी व्यायाम की जगह हल्के व्यायाम का चलन बढ़ रहा है। भारतीय ऋषियों ने स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए सूर्योदय से पहले ब्राह्म मुहूर्त में उठने तथा प्रातः पैदल-भ्रमण पर बहुत जोर दिया है। आजकल पैदल चलना छोड़कर

अधिकाधिक वाहन-निर्भरता ही हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप जैसे रोगों का प्रमुख कारण बन गया है। नित्य प्रातः चार-पाँच किलोमीटर तक तेज चलने वाले ([illegible]) व्यक्तियों को दिल की बीमारी और डायबिटीज नहीं होती।

क्षय की बीमारी से बचाव–

लहसुन का विधिपूर्वक सेवन करने वालों को तपेदिक (टी.बी.) रोग नहीं होता। इस प्रकार के क्षय को दूर करने में लहसुन अमृत के समान है। लहसुन अत्यन्त प्रबल कीटाणुनाशक है और एन्टीबायटिक औषधियों का अच्छा विकल्प है। इसके प्रयोग से क्षय के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

प्रयोग विधि– प्रयोग करने से पहले लहसुन को छील लीजिए। इसे छीलने के पश्चात् भी इसकी कलियों पर बहुत बारीक झिल्ली लिपटी रहती है, इसे भी अलग कर देना चाहिए। एक कली के तीन-चार टुकड़े कर लें और दोनों समय भोजन के आधा-एक घंटे बाद लहसुन की दो कलियाँ (फांकें) चबाकर ऊपर से पानी पीवें अथवा एक कली के चार टुकड़े कर एक-एक मुनक्का में दो-दो टुकड़े रखकर चबा जाएं।

श्वसन संस्थान के रोगों से बचाव–

प्राणायाम से श्वसन संस्थानगत व्याधियों से देह मुक्त रहता है। नित्य प्राणायामशील प्राणी नजला-जुकाम, पीनस, दमा, श्वास आदि रोगों से बचा रहता है। प्राणायाम फेफड़ों के दूरवर्ती कोषों में संचित मलों को दूर करता है और फेफड़ों के सभी खण्डों में प्राणवायु प्रदान कर रोगाणुओं को नष्ट कर देता है।

विशेष– सन्ध्योपासना में प्राणायाम क्रिया और ब्रह्मा, विष्णु, महेश के ध्यान का विधान है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश के ध्यान में क्रमशः लाल, नीला, सफेद रंग का ध्यान है अर्थात् ब्रह्मा (रक्तवर्ण), विष्णु (नील वर्ण), महेश (श्वेत वर्ण) माने गये हैं। यही आयुर्वेद के पित्त, वात, कफ की आधारशिला है। आयुर्वेद में पित्त, वात, कफ का वर्ण क्रमशः लाल, नीला, सफेद बताया है। अतः प्राणायाम में ब्रह्मा-विष्णु-महेश के रक्त, नील और श्वेत वर्ण क्रमशः आयुर्वेद के पित्त, वात और कफ हैं जिनका ध्यान करने से त्रिदोष साम्यावस्था में रहकर शरीर को आरोग्य प्रदान कर दीर्घायु बना देते हैं। प्रतिदिन एकाग्रचित्त होकर लाल, नीले और सफेद रंगों का ध्यान करने से त्रिदोष साम्य होकर देह के समस्त विकार दूर होते हैं और दीर्घायु की प्राप्ति होती है। त्रिदोषों की समानता से शरीर स्वस्थ रहता है।

श्वास रोग–

श्वास रोगियों को श्वास बदलने की विधि, दाहिने स्वर का अधिकतम अभ्यास तथा दाहिने स्वर में ही प्राणायाम के अभ्यास द्वारा श्वास रोग नियंत्रण में सक्षम किया जा सकता है।

भस्त्रिका प्राणायाम करने से दमा, क्षय आदि रोग नहीं होते। पुराने से पुराना, नज़ला-जुकाम कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाता है। नाक व छाती के रोग नहीं होते। गले की पीड़ा और कफ का विकार नष्ट होता है। ●

फलित ज्योतिष के विषय में कुछ महापुरुषों की शिक्षायें

स्वामी विवेकानन्द

गतांक से आगे –

– आचार्य हरिहर पाण्डेय

फलित ज्योतिष की सूक्ष्म बातों में बहुत ध्यान देना उन अन्धविश्वासों में है जिससे हिन्दुओं की अत्यधिक क्षति हुई है। मेरे विचार से इसे यूनानी भारत में ले आये और भारत से गणित की अनेक बातें सीखीं। ज्योतिष की भविष्यवाणियाँ अनेक बार मिथ्या होती देखी गयी हैं। इन पर दुर्बल मन वाले अदूरदर्शी ही विश्वास करते हैं। महान् पुरुष यह संकल्प करते हैं कि हम अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करेंगे। बुद्ध का कथन है कि लोग नक्षत्र कला से या उस प्रकार के अन्य मिथ्या प्रपंचों से जीविकोपार्जन करते हैं उन्हें दूर हटा देना चाहिए। बुद्ध और ईसा आदि कैसे महान् बने, इसे जानने के लिए ग्रह नक्षत्रों का अन्वेषण अनावश्यक है। उनका कुछ प्रभाव हो सकता है पर उसकी उपेक्षा कर देनी चाहिए। जिस वस्तु से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दुर्बलता उत्पन्न हो उसे पैर से भी मत छुओ, यह मेरी पहली शिक्षा है। हमारे छोटे से शरीर में असीम शक्ति कुण्डली मारे बैठी है। वह मनुष्य की प्रगति का मुख्य हेतु है। फलित ज्योतिष सदृश कल्पनाओं में भी सत्य का एक कण हो सकता है पर उसे दूर हटाने में ही कल्याण है। मैंने कुछ मनुष्यों को आश्चर्यजनक भविष्यवाणी करते देखा है परन्तु मेरे पास यह विश्वास करने का कोई हेतु नहीं है कि उसका आधार ग्रह नक्षत्र मण्डल है।

यदि तुम राष्ट्र को जीवित रखना चाहते हो तो ऐसे शास्त्रों से दूर रहो। ग्राह्य वह है जो हमें बलवान् बनाता है। हमारे देश में इस ज्योतिष की भाँति अनेक अन्धविश्वास कुकुरमुत्ते की भाँति उगे हैं, बढ़े हैं और हम अशिक्षित नारियों की भाँति उन्हें सत्य माने बैठे हैं। जो धन के लिए दूसरों को ठगता है उसको हम दुष्ट मानते हैं और जो आध्यात्मिक मूर्ख बनाता है उसको गुरु कहते हैं किन्तु गुरु वह है जो सत्य बताये और अन्धविश्वासों से ऊपर उठाये। तुम दिव्य हो, महान् हो, ईश्वरांश हो पर टिमटिमाते तारों से छले जा रहे हो। मैं भारत में कोई नयी महत्त्वपूर्ण बात बताना चाहूँ और उसे केवल अनुभूतियों की प्रामाणिकता दूँ तो कोई नहीं सुनेगा किन्तु यदि वेदों से कुछ ऋचाएँ निकालकर उन्हें तोड़ूँ मरोड़ूँ, उनका अत्यन्त असंभव अर्थ निकालूँ और वेदमंत्र के वास्तविक अर्थ का गला घोंट कर अपने विचारों को वेदों का तात्पर्य कहूँ तो झुण्ड के झुण्ड लोग मेरे पीछे फिरने लगेंगे। चूँकि जनता का मन लीकों में दौड़ता है इसलिए नये विचारों को पुरानी लीकों के पास रखना पड़ता है परन्तु मेरा मत यह है कि पुस्तकों से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक हुई है। पुस्तकें ही संसार के धार्मिक अत्याचारों और युद्धों के

लिए उत्तरदायी हैं। वस्तुतः कल्याण तो स्वतंत्रतापूर्वक विचार करने में है। (आकलैण्ड 25/2/1900 ई.)

योगिराज अरविन्द

मन्दिरों, गिरिजों और धार्मिक सम्प्रदाय ने धर्म, दर्शन और विज्ञान के विकास में भारी रुकावट डाली है। ब्रूनो इसलिए जलाया गया और गेलेलियो इसलिए बन्दी बनाया गया कि धर्म कुछ बन्धनों से बँधा है और वे बन्धन ऐसे हैं जो कसौटी पर खरे नहीं उतरते। धर्म की संकीर्ण भावनाएँ जनता के जीवन के आनन्द और सौन्दर्य को कुचलकर उसे ऊसर बना देती हैं। ये बिना सोचे समझे घिसी-पिटी कठोर व्यवस्था का समर्थन करती हैं। ये मान बैठी हैं कि आवश्यक परिवर्तन से भी धर्म का उल्लंघन हो जाता है। धर्म जब किसी सम्प्रदाय या कुछ रूढ़ियों से एकाकार होकर शान्ति का बाधक हो जाता है तब यह आवश्यक हो जाता है कि उसके प्रभुत्व को मानव प्रवृत्तियों से दूर करें। इस धर्मपाश का फलित ज्योतिष से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

लोकमान्य तिलक का भाषण

सांगली के सम्मेलन में

आज हम पंचांगशोधन के जिस कार्य के लिए एकत्र हुए हैं वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। वस्तुतः यह बहुत पहले होना चाहिए था पर समाज का इधर ध्यान ही नहीं था। प्रसन्नता की बात है कि आज की और आज से पचास वर्ष पूर्व की स्थिति में बहुत अन्तर है। उस समय यह सुनना भी असह्य था कि ग्रहलाघवीय पंचांग में प्रत्यक्ष से अन्तर पड़ता है। ऐसा कहने पर लोग रुष्ट होते थे। इस कथन को और पंचांगशोधन को धर्म एवं शास्त्र का घोर विरोध समझते थे और कहने वाले से सम्बन्ध तोड़ देते थे। सन् 1904 के बम्बई के 10-11 दिन के अखिल भारतीय सम्मेलन में भी मतैक्य नहीं हो सका। मेरी अभिलाषा है कि यह मतभेद समाप्त हो और पूरे महाराष्ट्र का ही नहीं, पूरे भारत का एक पंचांग बने। यदि हम अपने दुराग्रह और हठ का परित्याग कर दें तो वह शुभ दिन असम्भव नहीं है। ऐसा करने पर ज्योतिष की उन्नति होगी और उसकी दुर्गति का कंटाकाकीर्ण मार्ग प्रशस्त हो जायेगा। दुराग्रह न छोड़ने पर हमारी स्थिति मतभेद पूर्ण और हास्यापद बनी रहेगी।

इस समय सबसे आवश्यक यह है कि हम सब मिलकर नवीन ज्योतिषज्ञान का सदुपयोग करते हुए यह निश्चित कर दें कि क्रान्तिवृत्त का आरम्भ स्थल कौन-सा है। खेद है कि जहाँ से राशियों का आरम्भ होता है, जिसके आधार पर संक्रान्तियों के और राशियों के फलों का निर्णय होता है, वर्षा सूखा बताया जाता है और जन्मपत्री का फल लिखा जाता है वही स्थान अभी हमारे यहाँ विवादास्पद है। उसका निर्णय हो जाने पर अयनांशवाद स्वयं समाप्त हो जायेगा। उसके बाद करणग्रन्थ का प्रश्न है। वह कार्य आर्य और आंगल, दोनों ज्योतिषों में निपुण विद्वद्वर श्री व्यंकटेश बापू जी केतकर द्वारा सम्पन्न हो जायेगा। मेरी अभिलाषा है कि हमारा हिन्दी पंचांग ऐसा बने जो अंग्रेजी नाटिकल

की भाँति नौकागमन में भी उपयोगी हो। वह पूर्ण प्रत्यक्ष हो। इसके लिए भारत में नूतन वेधशाला का निर्माण और वेधज्ञों का होना अति आवश्यक है। हमें सत्य की ओर जाना है और मान लेना है कि सत्य की विजय होकर रहती है।

कुछ लोग कहते हैं कि शुद्ध गणित को स्वीकार कर लेने पर उसका धर्मशास्त्र से विरोध होगा पर यह सत्य नहीं है। होगा तो हम उसका समाधान कर लेंगे। हमें यह भूलना नहीं है कि कुछ मतभेद तो वेदार्थ में भी है परन्तु ज्योतिष वेदांगों में मूर्धन्य (सर्वश्रेष्ठ) है और यज्ञों का तथा धर्मशास्त्रोक्त पर्वों का समय वही बताता है अतः धर्मशास्त्र को ज्योतिष के बताये मार्ग पर ही चलना होगा। ज्योतिष प्रत्यक्षशास्त्र कहा गया है अतः उसकी प्रत्येक शाखा के संशयास्पद सिद्धान्तों को सत्य न मानकर हमें उनके मूल में जाना है और संशोधन करना है। ऋषियों का यही आदेश है, उपदेश है।

विद्वद्वर श्री श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर का मत

हमारे धर्मशास्त्रों के निर्माणकाल में अयनांश का प्रश्न नहीं था क्योंकि उस समय सम्पात रेवती के पास था किन्तु अब उनमें संशोधन करना ही होगा क्योंकि ऋतुओं का खिसकना प्रत्यक्ष है। शुद्ध ग्रहस्थिति के बोध के लिए हमें पाश्चात्य पद्धति को स्वीकार करना ही होगा क्योंकि पाश्चात्यों ने भिन्न-भिन्न देशों की वेधशालाओं में सूक्ष्म एवं विशाल यंत्रों की सहायता से शोध करके ज्योतिष को लगभग पूर्णावस्था में पहुँचा दिया है। हमें अपने पूर्वजों के प्रति गर्व होना उचित है पर उसकी मर्यादा विवेक से निश्चित करनी चाहिए। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस विषय में हमारे पूर्वज ही सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक हैं। आज का प्रश्न यदि उनके सामने होता तो ये क्या करते, इसे भारतीय ज्योतिष का इतिहास स्पष्ट बता देता है।

हमारे वेदांगज्योतिष में पाँच वर्षों का एक युग है, पाँच वर्षों का एक शाश्वत पंचांग है, उसमें वर्ष 366 दिनों का है और 30 मास के बाद नियमित रूप से एक अधिमास आता है। हमारे पूर्वज यदि उसी पंचांग को पकड़े रहते तो स्थिति हास्यास्पद हो जाती परन्तु वे सत्य के सामने परम्परा को महत्त्व नहीं देते थे और सदा नूतन शोध किया करते थे। इसी से हमारा ज्योतिष सर्वदा उन्नत होता रहा। उन्हें वह युगपद्धति अपूर्ण प्रतीत हुई। पितामह तथा वसिष्ठ ने वर्षमान 365 दिन 27 घटी किया और सूर्य सिद्धान्त ने उसे 365/15 पर पहुँचा दिया। हमारे प्राचीन सिद्धान्तकारों ने बार-बार वेध करके सूक्ष्म माध्यम गति का निर्णय किया और बिना किसी की सहायता के उच्च, पात, परम फल, परम शर और चन्द्रगति का आश्चर्यजनक मान निश्चित किया। ग्रहों के उच्च और पात में गति है, इसका तत्कालीन पाश्चात्यों को पता नहीं था। पर हमारे आचार्यों ने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति, शून्यांक, दशमलव, बीजगणित, उच्चगति, पातगति, अयनचलन, भुजज्या, त्रिकोणमिति आदि अनेक विषयों का पता लगाया और सबको सिखाया, किन्तु खेद है कि उनके वंशज हमने

डेढ़ दो सहस्र वर्षों में कोई शोध नहीं किया और परम्परा का ही राग आलापते रहे।

परकीय ज्ञान का बहिष्कार आत्महत्या है। सच कहें तो हम पाश्चात्यों से न ऋण ले रहे हैं न भीख माँग रहे हैं। पहले बहुत दिया था, आज ले रहे हैं। हमने ज्योतिष ही नहीं, उन्हें वैद्यक और दर्शनादि अनेक शास्त्र दिये थे और कटुसत्य यह है कि आविष्कार की जन्मभूमि सारी धरती है। कोई एक राष्ट्र नहीं। आविष्कार तारों की भाँति सारे विश्व को प्रकाश देते हैं और सबके स्वजन तथा पूज्य होते हैं। हम आज अपने पूर्वजों के ठीक विपरीत चल रहे हैं, और कहते हैं कि प्राचीन ज्योतिष सिद्धान्तों में संशोधन करने से धर्म भ्रष्ट हो जायेगा, हमारे विद्यालयों में नूतन पाश्चात्य विषय पढ़ाये जाते हैं, हमारे धर्मगुरु मोटर और विमान से यात्रा करते हैं, चश्मा लगाकर बिजली के प्रकाश में वेद पढ़ते हैं, माइक पर बोलते हैं और पाश्चात्य पंचांगों से दृश्य घटनाओं का गणित करते हैं तब धर्मभ्रष्ट नहीं होता पर तिथ्यादि में उनका प्रयोग करने से धर्म भ्रष्ट हो जाता है। हमारे वसिष्ठ कहते हैं कि तिथ्याादि का निर्णय दृश्य गणित से करो और चल संस्कृत सूर्य की संक्रान्ति को ही वास्तविक संक्रान्ति मानो पर हमारे अनेक ज्योतिषी कह रहे हैं कि नूतन शोध का तिथ्यादि में प्रयोग करने से धर्म भ्रष्ट हो जायेगा और तिथि में 5 घटी वृद्धि और 6 घटी के क्षय वाले नियम का ही प्रयोग करो नहीं तो श्राद्ध करने में पितरों का शाप लगेगा। यह कितनी कष्टप्रद बात है।

ग्रहणादौ परीक्षेत न तिथ्यादौ कदाचन।
बाणवृद्धिरसक्षीणा ग्राह्या नान्या तिथिः क्वचित्॥
दृक्सिद्धखेटैरिह साधितासु
कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात्।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते
पुण्यक्षया दुर्गतिमाप्नुवन्ति॥

उच्चशिक्षित ईसाई भी चर्च में जाते हैं और पृथ्वी को स्थिर कहने वाले क्राइस्ट को सम्मान देते हैं पर अब वे पृथ्वी को स्थिर नहीं मानते। पृथ्वी भर के ईसाइयों का इस समय एक पंचांग है और उसमें अन्तर केवल अक्षांश-देशान्तर का है किन्तु हिन्दुओं के शंकराचार्य एवं पाँच विषयों के आचार्य भी अभी पृथ्वी को स्थिर सिद्ध करते हैं और हिन्दुओं में परस्पर विरोधी सैकड़ों पंचांग प्रचलित हैं। इस कलंक को धोने के लिए सरकार एक राष्ट्रीय पंचांग चला रही है पर वह जनता एवं धर्माधिकारियों द्वारा तिरस्कृत है। उसकी भूमिका में लिखा है–

राष्ट्रीय पंचांग की भूमिका

हमारे अनेक राज्यों में इस समय ऐसे पंचांग प्रचलित हैं जिनमें बहुत अन्तर है। इतनी अधिक भिन्नता रखने वाली पंचांग पद्धति अन्य किसी भी देश में नहीं है। यहाँ वर्ष का आरम्भ भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है और तिथि नक्षत्र आदि की समाप्ति के समयों में तथा अन्य आकाशीय घटनाओं में बड़ा अन्तर रहता है। सूर्य के आधार पर मासारम्भ का दिन निश्चित करने में विभिन्न राज्यों में विभिन्न रूढ़ियाँ प्रचलित हैं। वर्षारंभ कहीं सौर वैशाख से, कहीं सौर भाद्रपद से और कहीं

सौर आश्विन से होता है। चान्द्र पंचांगों में वर्षारंभ कहीं चैत्र से, कहीं आषाढ़ से और कहीं कार्तिक से है। कहीं मास पूर्णिमा को समाप्त होता है तो कहीं अमावास्या को। इस विभिन्नता से गड़बड़ी उत्पन्न हो गयी है। हमारा, तिथि और नक्षत्र का काल बहुत भ्रामक है। इसका कारण यह है कि पंचांगकार सबसे अधिक महत्त्व उस सूर्यसिद्धान्त को देते हैं जिसकी रचना ईसा की चौथी शताब्दी में हुई है। आधुनिक वेधशालाओं में सूक्ष्मयंत्रों की सहायता से पर्यवेक्षण कर ग्रहगणित के सिद्धान्तों में जो सुधार किये गये हैं उन्हें वे नहीं मानते। वे मुंजाल और भास्कर आदि भारतीयों के शोधों को भी ग्रहण नहीं करते। इसका परिणाम यह है कि हमारे तिथि नक्षत्रादि अशुद्ध हैं।

भारतीयों की सबसे बड़ी त्रुटि है वर्षमान, जो पंचांगों का मूलाधार है। भारतीय पंचांगों का वर्षमान है 365 दिन 6 घंटा 12'6 मिनट, जबकि ऋतुओं सम्बन्धी (सायन) वर्षमान है 365 दिन 5 घंटा 48'8 मिनट। इस प्रकार वर्षमान में 23'8 मिनट की त्रुटि है। इसका परिणाम यह है कि हमारी संक्रान्तियाँ 23 दिन बाद मनाई जाती हैं और ऋतुएँ खिसकती चली जा रही हैं। इस प्रकार हर मास सब ऋतुओं में घूमता रहेगा। कुछ लोगों को अभी भी विश्वास है कि सम्पात का चलन 27 अंश से अधिक नहीं होगा पर यह भ्रम है। कुछ वर्षों से पंचांग में सुधार हो रहा है पर मतैक्य नहीं हुआ है सन् 1952 में सरकार ने पंचांग सुधार की समिति संघटित की है, उसने पूरे भारत के लिए 14 भाषाओं में एक पंचांग बनाया है। यह वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर प्रतिष्ठित है। उसका वर्ष सायन ([illegible]) है। उनके अनुसार वर्ष का आरम्भ विषुवसंक्रान्ति के दूसरे दिन से होगा। प्रथम मास चैत्र रहेगा, उसका आरम्भ 22 मार्च से होगा और प्लुत वर्ष ([illegible]) में 21 मार्च से होगा। राष्ट्रीय संवत् शकाब्द रहेगा और 1882, 1886 आदि प्लुतवर्ष होंगे। उनमें वर्ष 366 दिनों का होगा। विवरण यह है–

मास	दिन संख्या	मासारंभ
चैत्र	30	22 मार्च
वैशाख	31	21 अप्रैल
ज्येष्ठ	31	22 मई
आषाढ़	31	22 जून
श्रावण	31	23 जुलाई
भाद्रपद	31	23 अगस्त
आश्विन	30	23 सितम्बर
कार्तिक	30	23 अक्टूबर
मार्गशीर्ष	30	22 नवम्बर
पौष	30	22 दिसम्बर
माघ	30	21 जनवरी
फाल्गुन	30	20 फरवरी

●

'हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र' से उद्धृत

(क्रमशः)

दैनिक जागरण, वाराणसी 16 जनवरी, 2013

माँ की गोद ही बच्चे की पहली पाठशाला

– आचार्या नन्दिता शास्त्री

बदलते दौर में मां की भूमिका

जागरण
संस्कारशाला
शिक्षा से संपूर्णता

संदर्भ : दिल्ली दुष्कर्म

बच्चे को संस्कारित करने का दायित्व यद्यपि माता-पिता और आचार्य तीनों का है लेकिन माँ का स्थान सर्वोपरि है। गर्भ से ही शिशु को संस्कारित करने का कार्य आरम्भ हो जाता है। माँ के सम्पूर्ण आहार व्यवहार का प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। वह जो भी देखती-सुनती-पढ़ती और विचार करती है उसे गर्भस्य शिशु उसे ग्रहण करता है। वस्तुतः माँ की गोद ही बच्चे की पहली पाठशाला और सच्ची संस्कारशाला है।

पुराने समय में इन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता था। लोग जानते और मानते थे कि गर्भस्थ शिशु माँ की सांस के साथ सांस लेता है। ऐसे में वह चाहे तो बच्चे को वीर, धर्मात्मा-महात्मा जो चाहे बना ले। वेदों में बताया गया है कि– **अम्बा**, **अम्बिका** और **अम्बालिका** यानी माँ, नानी-परनानी अथवा माँ-दादी व परदादी के रूप में तीन पीढ़ियों का संस्कारित करने में योगदान होता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बच्चों को संस्कारित करने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

दौर प्राचीन-अर्वाचीन रहा हो या आज की आधुनिकता का, संतान के निर्माण का सम्पूर्ण दायित्व माता पर है। वेद में संतान को प्रजा कहा गया है जिसका अर्थ होता है प्रकर्ष से युक्त उत्पत्ति। इस प्रकार संतान चाहे स्त्रीलिंग हो या पुलिंग वह प्रजा तभी कहलाएगी जब वह प्रकर्ष से युक्त हो। वास्तव में माता वह होती है जो संतान का निर्माण करती है तथा पिता वह होता है जो संतान को संरक्षण देता है। बड़ी बात यह है कि वह किस दिशा में और कितना सार्थक है। वेद में प्रजा को **मातृमृष्टा** कहा गया है अर्थात् जो माता के द्वारा मांजी गई हो। बीज चाहे कैसा भी हो उसमें प्रकर्ष पैदा करना उसको मांजना यह कार्य नारी का है। वेद में प्रजा को धन माना गया है और उस धन को देने का दायित्व नारी पर है इसीलिए आर्य (हिन्दू) धर्म में नारी को लक्ष्मी माना जाता रहा है। लक्ष्मी का वास्तविक अर्थ है पहचान। नारी को लक्ष्मी इसीलिए कहा गया है क्योंकि वह बच्चे को उत्तम सुसंस्कारी संतान के रूप में एक पहचान देती है। वस्तुतः उत्तम संस्कारी संतान ही गृहस्थ का सर्वस्व धन है और इस धन को देने का कार्य बखूबी एक नारी ही कर सकती है, उसका इसी रूप में मूल्यांकन था।

हिन्दी में एक दोहा है। **पूत सपूत का धन संचय** यानी पुत्र यदि सुपुत्र, संस्कारी और पुरुषार्थी है तो उसके लिए धन जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। वह स्वयं कमा लेगा और कुपुत्र है तो भी उसके लिए माता-पिता को धन जोड़ने की चिंता करना व्यर्थ है। आप उसे कितना भी दे देंगे वह उसका सदुपयोग नहीं करेगा बल्कि दुराचार, व्यभिचार दुर्व्यसनों में उसे नष्ट कर देगा। ●

हम भारत से क्या सीखें?

द्वितीय भाषण

– प्रो0 मैक्समूलर

हिन्दुओं का चरित्र–

(पूर्व अंक का शेष)

यह सत्य है कि महमूद गजनवी के दो हजार वर्ष पहले तक के समय में बहुत थोड़े से ही विदेशी यात्रियों ने भारत भ्रमण किया था। कुछ थोड़े से ही आलोचकों ने भारत के विषय में कुछ लिखा भी है। इतना सब होने पर भी जब कभी जिस किसी यूनानी, चीनी, फारसी या अरबी विद्वान् ने भारतीयों के राष्ट्रीय-चरित्र पर लेखनी उठायी है तो उसने सदैव ही उनकी सत्य एवं न्याय-प्रियता पर अवश्य ही कुछ न कुछ लिखा है। सभी प्रकार के लोगों की दृष्टि सर्वप्रथम भारतीयों की सत्यप्रियता और न्याय प्रियता पर ही पड़ी है।

ऐसे लेखकों में केसियस नामक यूनानी वैद्य का नाम सर्वप्रथम हमारी दृष्टि में आता है, जिन्होंने भारत एवं भारतीयों पर लेखनी उठायी है। क्यूवाक्स का युद्ध 404 वर्ष ईसा पूर्व में हुआ था और उक्त यूनानी लेखक उक्त युद्ध के समय में जीवित था। उसने फारस के दरबार में भारतीयों के चरित्र के विषय में जो कुछ सुना था, उसी को लेखबद्ध कर दिया है और भारतीयों के विषय में किसी विदेशी द्वारा लिखा गया यह सर्व प्रथम लेख है। उक्त लेखक ने ''भारतीयों की न्यायप्रियता'' नाम का एक परिच्छेद ही लिखा है।

मेगस्थनीज, सिल्यूकस नाइकेटर का राजदूत था और पाटलिपुत्र (वर्त्तमान पटना) में चन्द्रगुप्त के दरबार में रहता था। उसने लिखा है कि भारतीयों में चोरी की बात तो शायद ही कभी सुनाई पड़ती थी और सदैव ही सत्य एवं पवित्रता को आदरणीय मानते थे।

एरियन नामक लेखक ईसा की दूसरी शताब्दी में भारतीय गुप्तचरों की चर्चा करते हुए लिखता है कि 'ये गुप्तचर यत्र-तत्र घूमते रहकर समाचार संग्रह करते रहते हैं और यदि राजा हुआ तो राजा को और यदि प्रजातंत्र हुआ तो उचित अधिकारी के पास इन समाचारों को भेजते रहते हैं। अबतक एक बार भी ऐसा नहीं हुआ है कि इन गुप्तचरों ने कभी गलत सूचना दी हो। वास्तविकता यह है कि भारतीयों पर झूठ बोलने का अपराध लगाया ही नहीं जा सकता।'

कालक्रम में चीनी यात्री इन लेखकों के परवर्ती हैं। इन लोगों ने भी एक स्वर से भारतीयों की सत्यता एवं उनके सत्साहस को प्रमाणित किया है। सातवीं शताब्दी में ह्वेनसांग नामक चीनी यात्री बौद्ध साहित्य के अध्ययन के लिये भारत आया था। आइये, हम भारतीयों के विषय में उसके मत को देखें। वह लिखता है कि ''यद्यपि भारतीय अत्यन्त सीधे स्वभाव के हैं फिर भी उनके चरित्र में स्पष्टवादिता एवं ईमानदारी का अद्‌भुत सम्मिश्रण है। जहाँ तक

धन का प्रश्न है वे कभी भी किसी भी चीज को अन्यायपूर्वक नहीं लेते। न्याय के प्रश्न पर उनकी उदारता प्रशंसनीय है। उनके प्रशासन में भी सर्वत्र स्पष्टता दृष्टि गोचर होती है।

भारत के मुस्लिम विजेताओं तथा उनके पोष्य लेखकों ने भी यत्र तत्र भारतीयों के सम्बन्ध में लिखा है। इनमें से एक लेखक इद्रीसी नाम का है जिसने ग्यारहवीं सदी में भूगोल पर एक ग्रन्थ लिखा है। यह लेखक भारतीयों की प्रशंसा निम्नलिखित शब्दों में करता है :–

''प्राकृतिक रूप से भारतीयों का झुकाव न्याय की ओर है और वे कभी किसी कार्य से न्यायच्युत नहीं होते। उनका विश्वास, उनकी ईमानदारी व स्वामिभक्ति तथा प्रतिज्ञापूर्ति सर्वज्ञात है। भारतीय इन गुणों में इतने आगे हैं और उनकी इस प्रकार की ख्याति इस ढंग से चारों ओर फैली है कि प्रायः सभी देशों के लोग इस देश में आ आकर एकत्रित होते हैं।''

13वीं शताब्दी में शम्सुद्दी अबू अब्दुल्लाह नाम का एक लेखक हुआ है। उसने अपने लेख में एक उद्धरण दिया है जो इस प्रकार है– ''भारतीयों की जनसंख्या असंख्य है जैसे बालू के कण। वे हिंसा और छल कपट से मुक्त हैं और न तो वे जीवन से डरते हैं न मृत्यु से।''

उसी शताब्दी में हमें मार्कोपोलो भी एक साक्षी के रूप में मिलता है। ऐसा लगता है कि उसने ब्राह्मण शब्द, को (एबराईमान) लिखा है कि यद्यपि वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण लोग व्यापारी जाति के नहीं हैं तो भी वे राजाओं द्वारा बड़े-बड़े व्यापारिक कार्यों में लगाये जा सकते थे। विशेषतया जब राज्य पर कोई संकट आ जाता था तभी वे व्यापारिक कार्यों में लगाये जाते थे। ऐसे समय का (संकट काल) विधान सामान्य कालीन विधान से सर्वथा भिन्न हुआ करता था और ऐसे समय में कितनी ही सामान्य व्यवस्थाओं के विपरीत कार्य भी किये जा सकते थे। मार्कोपोलो का कहना है कि ''आप लोगों को जानना चाहिये कि ये ब्राह्मण लोग संसार के सर्वश्रेष्ठ व्यापारी होते हैं। उनकी सत्यवादिता भी प्रशंसनीय होती है। वे पृथ्वी की किसी भी वस्तु के लिये झूठ नहीं बोल सकते।''

चौदहवीं शताब्दी में फ्रायर जार्डेनस की साक्षी भी देखने योग्य है। अपने विवरण के क्रम में ही उसने वर्राय विषय से परे हटकर लिखा है कि 'दक्षिणी और पश्चिमी भारत के लोग सत्यवादी एवं न्यायप्रिय होते हैं।'

पन्द्रहवीं शताब्दी में कमालुद्दीन अब्दुर्रज्जाक समरकन्दी (जीवन काल 1413 से 1482) एक राजदूत के रूप में (सन् 1440-1445 ई.) कालीकट तथा विजयनगर के राजाओं के यहाँ गया था। उसने सभी व्यापारियों को मिलने वाली सामान्य एवं विशेष सुरक्षा की प्रशंसा की है।

सोलहवीं शताब्दी में शाहंशाह अकबर के वजीर अबुलफ़जल ने आईने अकबरी में कहा है कि ''हिन्दू लोग धार्मिक, सहनशील, नम्र, प्रसन्नमुख, न्यायप्रिय, त्यागी, अपरिग्रही व्यापार एवं व्यवहारकुशल, सत्यनिष्ठ एवं सत्य प्रशंसक कृतज्ञ तथा असीम प्रभुभक्त होते हैं तथा उनमें जो सैनिक वृत्ति में हैं उन्हें यह पता भी

नहीं है कि युद्ध भूमि से भागना कहते किसे हैं।''

वर्तमानकाल में (मैक्समूलर के समय में) मुसलमान लेखक यह मानने को तत्पर से दिखते हैं कि हिन्दुओं का हिन्दुओं के साथ जितना सौहार्द एवं न्यायपूर्ण व्यवहार है उतना मुसलमानों का मुसलमानों के प्रति नहीं।

कर्नल स्लीमैन के ही अनुसार मीर सलामत अली एक सम्माननीय कर्मचारी था, उसने स्वयं स्वीकार किया है कि ''प्रत्येक हिन्दू अपने को इस बात का अधिकारी भी समझता है और इस कार्य में गर्व का अनुभव भी करता है कि वह किसी भी मुसलमान को अपना मित्र बना ले। बल्कि हिन्दू से उसी प्रकार का व्यवहार करने में वह उतने गर्व का अनुभव नहीं करता।' मुसलमानों में कुल मिलाकर बहत्तर फिरकों से कम नहीं है। मीर सलामत अली का ही कहना है कि इनमें से किसी भी फिरके में इतनी उदारता नहीं है कि वह पृथ्वी के किसी भी भाग के रहने वाले अपने ही फिरके या शेष इकहत्तर फिरकों में से किसी भी फिरके के किसी भी व्यक्ति को पूर्णतः विश्वासपात्र मान कर अपना मित्र बनाले। इसके विपरीत हिन्दुओं में इस सम्बन्ध में इतनी उदारता है कि वे किसी भी धर्म, सम्प्रदाय या जाति के किसी भी सदस्य को पूर्णतया विश्वासपात्र मानकर उसके मित्र बन सकते हैं।''

इसी प्रकार के उद्धरण अनेकानेक लेखकों एवं उनके ग्रन्थों से दिये जा सकते हैं। हम शतशः उद्धरणों से यह प्रमाणित कर सकते हैं कि जो भी कर्मचारी पर्यटक या लेखक हिन्दुओं के सम्पर्क में आया, वही भारतीयों के राष्ट्रीय चरित्र में निहित सत्यनिष्ठा एवं सत्य प्रियता से ही सर्वप्रथम प्रभावित हुआ और वह प्रभाव निर्विवाद रूप से सर्वथा विस्मय की सीमा तक जा पहुँचा। प्राचीन लेखकों में से किसी ने भी उन पर असत्य प्रियता का दोष नहीं लगाया है। इस प्रकार की मान्यताएँ एक दम से निराधार तो हो ही नहीं सकतीं। उपरोक्त मान्यताएँ ऐसी तो हैं नहीं कि किसी ने देखा और लिख दिया। वास्तविकता यह है कि भारतीय चरित्र की ये मूलभूत बातें हैं जो सभी को सर्वत्र दिखायी पड़ी हैं और सभी को सर्वदा प्रभावित भी किया है। हमारे समय में भी ऐसे अनेक विदेशी हैं जो कहते हैं कि हिन्दू कभी भी झूठ नहीं बोलते। तुलना के लिये फ्रांस में पर्यटन करने वाले किसी अंग्रेज लेखक को ले लीजिये तो आप पावेंगे कि उसने फ्रांसीसियों की ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा की शायद ही कभी प्रशंसा की हो। इसी प्रकार इंग्लैण्ड के विषय में आप किसी भी फ्रांसीसी लेखक की राय पढ़िये तो उसमें शायद ही कहीं आपके लिये प्रशंसापूर्ण शब्द मिलें।

आप को इस बात पर आश्चर्य होगा कि यदि ये सभी बातें सत्य हैं तो क्या कारण है कि इंग्लैण्ड में भारतीयों के विरुद्ध इतनी बातें कही जाती हैं। आप को ऐसा कोई भी कारण नहीं मिलेगा, जिससे अंग्रेज लोग भारतीयों की अनेक बातों को सहते हैं, उन्हें संरक्षण प्रदान करते हैं, किन्तु उनका कभी भी विश्वास नहीं करते और नहीं उनसे कभी समानता का व्यवहार करते हैं। ●

(क्रमशः)

1857 की क्रान्ति का जनक स्वामी पूर्णानन्द

– जयन्त राव कुलकर्णी

विदेशी विधर्मी महासत्ता के चाटुकार भाट इतिहासकारों द्वारा लिखा गया। इतिहास कभी इतिहास नहीं होता इतिहास वह होता है जो वास्तविक घटा हो।

गद्दारों द्वारा स्वहित में किया हुआ द्रोह विद्रोह होता है क्रान्ति उसे कहते हैं जो ईश्वर प्रदत्त निसर्ग सम्पदा का सदुपयोग समस्त प्राणिमात्र के कल्याणार्थ मानव मात्र के हितार्थ राष्ट्र धर्म संस्कृति के हितार्थ किया जाने वाला व्यापक संघर्ष हो जिसके करने पर आमूलचूल परिवर्तन होता हो।

क्रान्ति तब सफल होती है जब करने वालों का ध्येय-चिन्तन एक हो उन में अनुशासन हो उन में उत्साह उमंग हो उन में दृढ़ विश्वास एकता तथा साधन हो उन का नियत्रंक संचालक एक हो तथा सभी प्राणिजनों के लिये निरन्तर संघर्षरत हो इसी का नाम क्रान्ति है।

छत्रपति शिवाजी द्वारा लड़ा गया संग्राम वास्तविक सफल क्रान्ति थी। 1857 की क्रान्ति में संचालकों का नियंत्रण नहीं था, क्रान्तिकारियों के संघर्ष का लाभ धूर्त दबंग राष्ट्रद्रोही गद्दारों ने उठाया उन्होंने अंग्रेजों पर अपनी धाक रखने के लिए क्रान्तिकारियों को दबाया किन्तु अन्दरूनी सहायता करते रहे, क्रान्ति सफल होने का चिह्न प्रगट होने लगते ही उन्होंने अंग्रेजों के झण्डे तले क्रान्तिकारियों का दमन किया परन्तु आखिर गद्दारों पर अंग्रेज भारी पड़े उन की हिन्दुस्तान पर केन्द्रिय सत्ता स्थायी हुई।

मराठा साम्राज्य स्वकीयों ने डुबाकर अंग्रेजी कम्पनी सरकार को स्थापित किया तब पंच महल तल कोकण में दाबोली मठ का विद्वान् तपस्वी संन्यासी स्वामी पूर्णानन्द जी ने बन्दीवान छत्रपति के आज्ञा से सेनापति उमा जी नाईक जी को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करके उन्हें आशीर्वाद दिया था।

पूरे हिन्दोस्तानियों की केन्द्रिय सत्ता बनी कम्पनी सरकार के विरोध में नवयुवकों को प्रतापी योद्धा बनाकर स्वतंत्रता के लिए संगठित करने के उद्देश्य से दामोली का संन्यासी स्वामी पूर्णानन्द महाराज ब्रह्मावर्त्त पहुँचे।

मराठा साम्राज्य का निवृत्त पेशवा ब्रह्मावर्त्त महाराजा श्रीमंत बाजीराव द्वितीय से राष्ट्र की स्थिति पर विचार विनिमय कर के स्वामी पूर्णानन्द जी ने ब्रह्मावर्त्त किले में वैदिक सैनिक विद्यालय गुरुकुल की स्थापना करके आर्यावर्त्त भारत के 3275 राजवाड़ों के युवराजों को आमंत्रित करके उनके संग ब्रह्मावर्त्त प्रजाजनों को भी सैनिक शिक्षा देकर योद्धा बनाकर शस्त्र सज्जा किया था।

स्वामी पूर्णानन्द जी ने ब्रह्मावर्त्त महाराजा श्रीमंत बाजीराव जी का साढ़ू सरदार मोरोपंत तांबे जी की

तेजस्विनी कन्या मणिकर्णिका तांबे जी का विवाह झाँसी नरेश गंगाधर राव नेवालकर जी से कराकर रानी लक्ष्मीबाई द्वारा झाँसी किले में सैनिक विद्यालय की स्थापना करके प्रजाजनों को स्त्री-पुरुषों को सैनिक शिक्षा देकर योद्धा बनाकर शस्त्र सज्जा कराया था।

स्वामी पूर्णानन्द जी ने झाँसी नरेश गंगाधर राव जी के मृत्यु उपरांत रानी लक्ष्मीबाई के गर्भ से उत्पन्न बालक झाँसी का उत्तराधिकारी युवराज दामोदर राव जी को झाँसी के गद्दी पर बिठाकर उनका राज तिलक किया।

झाँसी नरेश दामोदर राव के दरबार में रानी लक्ष्मीबाई द्वारा उनके ससुर शिवराम भाऊ नेवालकर जी तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी सरकार का गवर्नर जनरल बेटीक के मध्य में हुआ समझौता रद्द कराकर झाँसी राज्य को स्वतंत्र किया था।

1853 में स्वामी पूर्णानन्द जी ने स्वामी विरजानन्द जी को संन्यास की दीक्षा देकर ब्रह्मावर्त्त के छात्राओं को प्राचीन वैदिक प्रणाली के अनुसार संस्कृत भाषा तथा वेद वेदांग की दर्शनशास्त्र की शिक्षा देना प्रारम्भ कराई थी।

स्वामी पूर्णानन्द जी द्वारा हरिद्वार के कुम्भ मेले में उपस्थित साधु-संतों के समागम की अध्यक्षता करते हुए आर्यावर्त्त भारत को विदेशी विधर्मियों की दासता से मुक्त कराने का संकल्प कराया था।

स्वामी पूर्णानन्द जी ने स्वामी ध्यानानन्द जी को संन्यास की दीक्षा देकर उन के द्वारा सम्पूर्ण भारत के 3275 राजवाड़ों के नरेशों से सम्पर्क प्रस्थापित कर के आर्यावर्त्त भारत को परदास्यता से स्वतंत्र कराने हेतु तथा स्वराज्य साम्राज्य की स्थापना कराने हेतु उन्हें जागृत कर के स्वतंत्रता समर के लिए कटिबद्ध होने के लिए प्रेरित कराकर उनको संगठित कराने के लिए उन तीर्थराज काशी नगरी में काशीराज के महलों में श्रावण शुक्ल प्रतिपदा सवंत् 1913 को बुलवाकर ग्वालियर नरेश जीवाजीराव शिंदे जी की अध्यक्षता में इन्दौर नरेश तुकोजी होलकर जी के सत्र संचालन में 2150 राजवाड़ों के राजाओं की राजपरिषद् द्वारा आर्यावर्त्त भारत का सम्राट् धोण्डोपंत नाना साहब पेशवा को मनोनीत कराकर आजाद हिन्दू सरकार की स्थापना करके राज प्रधान मंडल गठित कर दिया था।

सम्राट् नाना साहब पेशवा प्रधान राव गोपाल देव (राव साहेब) सुरक्षा रामचन्द्र तात्या टोपे, गृह रानी लक्ष्मीबाई नेवालकर विदेश राव तुलराम तथा सहायक मंत्री आरा नरेश अमर सिंह, शाहपुरा नरेश राजा नाहरसिंह, बानपुर नरेश मर्दनसिंह एवं नखर नरेश राजा मानसिंह जी थे।

ब्रिटिश आर्मी के दस लाख प्रशिक्षित तथा अत्याधुनिक शस्त्र सज्जा हिन्दी सिपाहियों में से साढ़े तीन लाख हिन्दी सिपाही पृथक् होकर आजाद हिन्द सरकार के नेतृत्व में क्रान्ति में भाग लेने जा रहे सिपाहियों का कमाण्डर जनरल इन चीफ मंगल पाण्डे जी को तथा डिप्टी टीकासिंह जी को बनाया गया था। 1857 की क्रान्ति असफल होने के बाद 1863 में स्वामी पूर्णानन्द जी ने हरिद्वार में जाह्नवी नदी में जल

समाधि ली थी।

स्वामी पूर्णानन्द जी का पूर्वाश्रम का वास्तविक नाम श्रीमंत अमृतराव पेशवा था। इनका जन्म सह्याद्रि पर्वत के अन्तर्वेदि में खड़ा शिवनेरी दुर्ग के पायदानपर बसा जेऊर गाँव में गाँव के पाटिल जनार्दन गंदे की पत्नी लक्ष्मीबाई के गर्भ से 1763 में हुआ था उन्हें उनके छठवें साल में मराठा साम्राज्य का सेनापति रघुनाथ राव जी ने दत्तक लिया था इनको दत्तक लेने के बाद छः साल के बाद श्रीमंत बाजीराव पेशवा द्वितीय का जन्म हुआ था।

स्वामी पूर्णानन्द संस्कृत भाषा व्याकरण के विशेषज्ञ थे तथा वेद मार्तण्ड दर्शनाचार्य थे तथा योद्धाओं में महाप्रतापी योद्धा थे।

पुरन्धर का सूबेदार श्रीमंत अमृत राव पेशवा ने 1798 को अपनी पत्नी कल्याणी की पूर्ण सहमति से गृहस्थाश्रम का त्याग कर के आयु के 35वें साल में स्वामी विश्वानन्द जी से पंचवटी नासिक में संन्यास लिया था तथा स्वामी पूर्णानन्द नाम धारण किया था। स्वामी पूर्णानन्द जी ने अपना कारभारी सीताराम घोलपजी को संन्यास देकर स्वामी चिदानन्द नाम से अलंकृत किया था। स्वामी पूर्णानन्द जी ने कोकण में दाभोली गाँव में अपना मठ बनाया था।

स्वामी पूर्णानन्द की सहोदर सखी बहन रोहिणी के पति मराठा साम्राज्य के दीवान पाण्डुरंग हरीपंत थे इन के साढू श्रीमंत बाजीराव द्वितीय तथा सरदार मोरोपंत तांबे थे।

पाण्डुरंग हरीपंत की बहन जाह्नवी के पति गोविन्दराज सरदेसाई वानेवाडीकर जी की बहन कल्याणी के पति अमृतराव स्वामी पूर्णानन्द बने थे।

अमृतराव की बहन मुकला के ननंद का पूर्व सीताराम घोलप पुरंधर के कारभारी थे वे स्वामी पूर्णानन्द जी से संन्यास लेकर स्वामी चिदानन्द बने।

दीवान पाण्डुरंग हरीपंत की दूसरी पत्नी रुक्मिणी का बेटा रामचन्द्र तात्या टोपे ब्रह्मावर्त गुरुकुल के आचार्य तथा ग्वालियर के सेनापति तथा आजाद हिन्द सरकार के सेनाध्यक्ष थे।

1763 स्वामी पूर्णानन्द जी का जन्म जेऊर गाँव में।

1769 दत्तक विधि।

1770-82 शिक्षण।

1785 विवाह तथा पुरन्धर के सूबेदार बने।

1798 संन्यास।

1800 मठ स्थापन दाभोली में।

1820 सैनिक विद्यालय की स्थापना ब्रह्मावर्त्त में।

1843 सैनिक विद्यालय की स्थापना झाँसी में।

1852 क्रान्ति का संकल्प।

1856 आजाद हिन्द सरकार की स्थापना।

1857 क्रान्ति।

1858 असफल क्रान्ति।

1863 हरिद्वार में जाह्नवी में जल समाधि।

●

स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

गतांक से आगे–

– आशा रानी व्होरा

क्रान्ति की शुरुआत

1824 में एक सैनिक-टुकड़ी के बर्मा की लड़ाई में जाने से इन्कार करने पर प्रथम सिपाही-विद्रोह बैरकपुर में ही हुआ था, जहाँ 700 सैनिक निर्ममता से गोलियों से भून डाले गये थे। यह मात्र संयोग था या बैरकपुर की भूमि की विशेषता कि सन् 1857 के बड़े संगठित विद्रोह का प्रारम्भ भी बैरकपुर से ही हुआ।

28 फरवरी को एक सरकारी पत्र में सेनापति ने जनरल को लिखा था, ''जबरदस्ती ईसाई बनाने की अफवाह से बैरकपुर में सिपाहियों में असंतोष फैल रहा है।'' फरवरी में बैरकपुर स्टेशन में आग लगा दी गयी। हर रात अंग्रेज अफसरों की बैरक में पुआल के छप्पर पर जलते हुए तीर गिरने लगे। रानीगंज में भी आगजनी हुई। हर रात सिपाहियों की बैठकें होने लगीं। आग तापने के बहाने बैठकर वे परस्पर अंग्रेजों के अन्याय-अत्याचार की कहानियाँ कहने-सुनने लगे। बदले की आग को हवा दी जाने लगी।

बैरकपुर से 100 मील दूर बहरामपुर की सैनिक छावनी थी। वहाँ देसी पैदल सैनिकों की 19वीं रेजीमेंट, एक घुड़सवार दल व कुछ तोपची सैनिक थे। अंग्रेज अफसरों ने बैरकपुर में विद्रोह की गन्ध पा बिगड़े सिपाहियों को इधर-उधर भेज दिया और उनका काम संभालने का आदेश बहरामपुर के सिपाहियों को मिला।

सुबह परेड के समय बहरामपुर के सैनिकों ने बन्दूकों के लिए चमड़े के ढक्कन वाले कारतूसों को लेने से इन्कार कर दिया। कंपनी के सैनिकों को एनफील्ड राइफल दी जाने लगी थी। इस राइफल की नली में कारतूस बहुत सटकर बैठता था। अतः राइफल में भरने से पहले उसमें चरबी लगानी पड़ती थी। मालूम होने पर वह खबर सभी सैनिकों में तेजी से फैल गयी थी। साथ ही यह अफवाह भी फैल गयी कि कारतूसों में गाय और सुअर की चरबी लगाई जाती है, जिससे हिन्दू-मुस्लिम सभी सैनिकों को यह विश्वास हो गया कि सरकार ने हमारा धर्म भ्रष्ट करने के लिए ही यह षड्यंत्र रचा है। इससे सेना में बड़ी अशांति फैली थी। सरकारी घोषणा जारी करके भ्रम का निवारण किया गया। पर उसका भी कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ था। सैनिक उन कारतूसों का इस्तेमाल न करने के लिए डट गये।

सेनापति मिचेल गुस्से से चिल्लाया, ''यदि सिपाही ये कारतूस इस्तेमाल करने से इन्कार करेंगे, तो पूरी रेजीमेंट को बर्मा या चीन भेज दिया जायगा। सोच लो! इन्कारी पर यहाँ कड़ी सजा मिलेगी, वहाँ मौत।'' इस धमकी से सिपाहियों में असंतोष और बड़ा।

सैनिकों को इस तरह डराकर और अगली सुबह के लिए तोपची व घुड़सवार सैनिकों को तैयार रहने का आदेश दे मिचेल सोने चला गया। पर उसकी आँखों में नींद न थी। फौजी बैरकों में ढाक बजा कर हो-हल्ला किया जा रहा था। वे क्रोध से पागल थे। मिचेल ने सुबह के लिए तैयारी कर रखी थी कि विद्रोह होने पर उसे दबाया जा सके। पर हो-हल्ला सुनकर वह रात को ही उठा, फौजी पोशाक पहनी और छावनी की ओर बढ़ गया। तोपची व घुड़सवार सैनिकों से मोर्चे संभलवा दिये। अफसर बुला लिये। आधी रात का समय था। सैनिकों ने मशालें जलाकर प्रस्थान किया। तोपों से उड़ाये जाने की विपत्ति सामने थी। पर सिपाही अविचल थे। रात को ही बड़ा खून खराबा हो जाता, पर देसी अफसरों ने मिचेल को समझा-बुझाकर अगली सुबह की परेड बन्द करवा दी। सिपाही बैरकों में लौट गये।

सैनिकों के इस विद्रोह का समाचार कलकत्ता पहुँचा, तो कम्पनी के अधिकारी सतर्क हो गये। विद्रोही सैनिकों को दंड देना निश्चित हुआ। स्टीमर भेजकर रंगून से अंग्रेज रेजीमेंट बुला ली गयी। कर्नल मिचेल को ऊपर से आदेश हुआ, विद्रोही सैनिकों को बैरकपुर लाकर उनके हथियार छीन लिये जाएं। रंगून की रेजीमेंट आने व हथियार छीने जाने की बात से आतंक फैल गया। तैयारियाँ होने लगीं। बैरकपुर से हटाये गये अनेक सैनिक कलकत्ते के किले व अन्य जगहों पर पहरे पर तैनात थे जिससे वे अधिकारियों के सामने रहें। टकसाल का पहरा बहरामपुर की 34 नम्बर की टुकड़ी के जिम्मे था। 10 मार्च की शाम ढले दो सिपाही आ कर टकसाल के फाटक पर सूबेदार से मिले। और कहा, ''गवर्नर जनरल खुद बैरकपुर जाकर हथियार-घर का जिम्मा संभालेंगे, क्योंकि वहाँ सिपाही विद्रोह की आशंका है। आधी रात को कलकत्ते के सिपाही किले के संतरियों से मिल जाएंगे। उस समय यदि वह भी अपनी टुकड़ी उनमें मिला दें, तो कंपनी सरकार को नेस्तनाबूद करना आसान हो जाएगा। सूबेदार ने उनकी बात मानने के बजाय उन दोनों सैनिकों को पकड़वा दिया। फौजी अदालत ने उन्हें 14-14 साल की सजा सुनाई।

अब क्रान्ति का पूर्वाभास गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग को मिल गया था। 17 मार्च की सुबह कवायद के मैदान में सैनिकों को हाजिर होने का आदेश मिला। निश्चित समय पर सेनापति हियरसे ने सैनिकों को बरगला कर पक्ष में कर लेने की कोशिश की, ''आप लोग निश्चिंत रहें। मेरे रहते कोई भी अंग्रेज सिपाही बैरकपुर की ओर नहीं आ सकता। केवल 19 नम्बर टुकड़ी के सिपाहियों के हथियार छीनने का हुक्म ऊपर से मिल सकता है, क्योंकि वे लोग गलत हरकतें कर रहे हैं। उस समय घुड़सवार सेना व तोपची हाजिर रह सकते हैं, केवल यह देखने के लिए कि काम ठीक हो, कोई गड़बड़ न हो।'' लेकिन यूरोपीय सेना के आने की खबर से बैरकपुर में उत्तेजना फैल गयी। दबी आग सुलग उठी।

आदेशानुसार 19 नम्बर टुकड़ी 30 मार्च को

बैरकपुर पहुँच गयी और सेनापति मिचेल सरकारी आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। तभी खबर आई कि बैरकपुर के सिपाहियों ने बगावत कर दी है। तलवार की चोट से एक अंग्रेज अफसर बुरी तरह घायल हो गया। दरअसल 29 मार्च को ही अंग्रेज सैनिकों के आने की खबर बैरकपुर पहुँच गयी थी। 34 नम्बर टुकड़ी का नवयुवक सिपाही मंगल पाण्डे खामोश न बैठ सका। भरी पिस्तौल व तलवार ले वह बैरक से निकल पड़ा। उसने बिगुल बजाकर साथियों को चलने के लिए उकसाया। पर आतंक के कारण किसी ने साथ न दिया। मंगल पाण्डे पागलों की तरह घूमता रहा। एक अंग्रेज अफसर, जो वहाँ मौजूद था, को उसने निशाना बनाया। साथियों ने न रोका, न साथ दिया। निशाना चूक गया। अफसर बच गया। उसका घोड़ा गिर गया। टुकड़ी के लेफ्टिनेंट खबर पाते ही दौड़े आये। मंगल पाण्डे ने तोप की ओट ले फिर गोली चलाई। लेफ्टिनेंट बग व मेजर ह्यूसन जख्मी हो गये। दोनों के प्राण संकट में पड़ गये। जब वे लहूलुहान पड़े थे किसी दूसरे सिपाही ने उन्हें बन्दूक के कुन्दे से ठोकर भी मारी। तभी एक मुसलमान सिपाही शेख पल्टू ने मंगल पाण्डे की तलवार से घायल होकर भी उसे पकड़ लिया। एक दूसरे सिपाही ने उसे शेख पल्टू से मुश्किल से छुड़ाया। तभी सेनापति हियरसे वहाँ पहुँच गया। पर बेचैन मंगल पाण्डे ने सेनापति की तरफ निशाना साधने के बजाय अपने आपको गोली मार ली। वह बुरी तरह जख्मी हो गया। साथियों द्वारा बगावत में साथ न देने के कारण दुखी व हताश होकर ही उसने अपनी जान लेने की कोशिश की थी।

31 मार्च को सैनिकों के हथियार छीने जाने थे। मंगल पाण्डे की संभावित शहादत से विद्रोह की आशंका और बढ़ गयी थी। अंग्रेज स्त्रियाँ और बच्चे वहाँ से बाहर भेज दिये गये। निश्चित समय पर कवायद के मैदान में तोपों के सामने भारतीय सैनिक चुपचाप खड़े थे और तोपों के समीप अंग्रेज सैनिक, ताकि आदेश न मानने पर उन्हें तोपों से उड़ाया जा सके। आतंक के इस माहौल में 34 नम्बर टुकड़ी व 19 नम्बर टुकड़ी ने चुपचाप हथियार डाल दिये। हंगामा नहीं हुआ। अपनी गोली से घायल मंगल पाण्डे पर 6 अप्रैल को फौजी अदालत में मुकदमा चलाया गया और 8 अप्रैल की सुबह उसे फांसी दे दी गयी। साथियों के विरुद्ध कुछ भी बोले बिना वह चुपचाप फांसी पर चढ़ गया। 1857 की क्रान्ति की यह पहली चिनगारी थी, जिसमें बहादुर मंगल पाण्डे ने पहली शहादत दी। अंग्रेज अफसर पर हमले के समय चुपचाप देखते रहने के आरोप में मंगल पाण्डे के साथी ईश्वरी पाण्डे को भी मुकदमे के नाटक के बाद 21 अप्रैल को फांसी दे दी गयी। शेख पल्टू की तरक्की हो गयी। यह और ऐसे अन्य अनेक विवरण हमारे आजादी के इतिहास के काले पन्ने हैं, जो यहाँ विदेशी शासन के पैर जमाने में सहायक हुए।

●

(क्रमशः)

अर्जुनरावणीयम्

द्विगुपादे (द्वितीयाध्याय-चतुर्थपादे)

डा0 विजयपाल शास्त्री, प्रवाचक
राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्, जयपुर

गतांक से आगे–

44. आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्- मा वधीष्ट। माऽऽहत।

मा वधिष्ट भवान् पाणी माऽऽहतोरू रुषात्मनः।
कियन्तं यत्नमाधत्ते जिघांसुः शशकं हरिः।52।

अन्वयः– रुषा भवान् आत्मनः पाणी मा वधिष्ट, ऊरू मा हत। शशकं जिघांसुः हरिः कियन्तं यत्नम् आधत्ते।

अर्थ– आप क्रोध से अपने हाथों (भुजाओं) को मत पीटिए तथा ऊरुओं (जाँघों) को भी मत पीटिए। शशक (खरगोश) को मारने के इच्छुक सिंह को कितना सा यत्न करना पड़ता है।।52।।

45. इणो गा लुङि-मा गाः।
46. णौ गमिरबोधने-गमय। 47. सनि च- जिगमिषा।

मा गास्तत्र स्वयं वीर गमयान्यं निशाचरम्।
का वा जिगमिषास्थाने तव तत्र महात्मनः।।53।।

अन्वयः– वीर! तत्र स्वयं मा गाः, अन्यं निशाचरं गमय। तव महात्मनः अस्थाने का वा जिगमिषा?

अर्थ– हे वीर! तुम स्वयं वहाँ मत जाओ, किसी अन्य निशाचर को भेज दो। तुम्हारे जैसे महापुरुषों के लिए ऐसे अनुचित स्थान पर जाने की इच्छा करना शोभनीय नहीं है।।53।।

48. इङश्च- अध्यजिगांसत। 49. गाङ् लिटि- अधिजगिरे

रावणस्य जना यातुराशिषोऽध्यजिगांसत।
स्तुतिं चरितसम्बद्धां तथाधिजगिरे परे।।54।।

अन्वयः– जनाः यातुः रावणस्य आशिषः अध्यजिगांसत तथा चरितसम्बद्धां स्तुतिम् अधिजगिरे।

अर्थ– (तब) कुछ राक्षसजन (सहस्रार्जुन के प्रति) जाते हुए रावण के लिए आशीवर्चन (शुभाशंसा-वाक्य) बोलने लगे, तथा उसके चरित से सम्बद्ध स्तुतिवचन पढ़ने लगे, स्तुतिवाचन करने लगे।।54।।

50. विभाषा लुङ्लृङोः- अध्यगीष्ट, अध्यैष्ट। अध्यगीष्यत, अध्यैष्यत।

योऽध्यगीष्ट द्विजो वेदान् विद्वानध्यैष्ट चागमान्।
न तावार्चीद्युधे गच्छन् साधुद्वेषी दशाननः।।55।।

अन्वयः– यः द्विजः वेदान् अध्यगीष्ट, (यः) विद्वान् च आगमान् अध्यैष्ट, युधे गच्छन् साधुद्वेषी दशाननः तौ न आर्चीत्।

अर्थ– जिस विद्वान् द्विज ने वेद पढ़े थे तथा जिस विद्वान् ने आगम = शास्त्र पढ़े थे, युद्ध के लिए जाते हुए साधुद्वेषी (सज्जनों से द्वेष करने वाले) दशानन ने उन दोनों की ही पूजा नहीं की।।55।।

यद्यध्यैष्यत नाम्नायं नाध्यगीष्यत वा श्रुतीः।
रक्षसोऽस्य ततो वृत्तमभविष्यन्न कीदृशम्।।56।।

अन्वयः– यदि आम्नायं न अध्यैष्यत, (यदि)

वा श्रुतिं न अध्यगीष्यत, ततः अस्य रक्षसः वृत्तं कीदृशं नु अभविष्यत्?

अर्थ– यदि यह आम्नाय (गुरुपरम्परागत सदुपदेश) को नहीं पढ़ा होता, और यदि श्रुति (वेद) को नहीं पढ़ा होता तो इस राक्षस का वृत्त-आचरण कैसा (भयंकर) होता? अर्थात् आम्नाय व श्रुति के पढ़ने के उपरान्त इसका आचरण ऐसा भयंकर है तो इन्हें बिना पढ़े तो और भी भयंकर होता।।56।।

(रथोद्धता)

51. णौ च संश्चङोः- अधिजिगापयिषाम्। अध्यजीगपत्।

तत्प्रयाणपटहः प्रतिशब्दैरध्यजीगपदिवाशु दिगन्तान्।
प्रध्वनंश्च पुरि विप्रजनानामाक्षिपन्नधिजिगापयिषां सः॥57॥

अन्वयः– तत्प्रयाणपटहः प्रतिशब्दैः आशु दिगन्तान् अध्यजीगपत् इव। पुरि विप्रजनानाम् अधिजिगापयिषाम् आक्षिपन् प्राध्वनत् च।

अर्थ– रावण का प्रयाणपटह (प्रस्थान-कालीन नगाड़ा) प्रतिध्वनि से मानो दिशाओं को पढ़ा सा रहा था। वह लङ्कापुरी में विप्रजनों की अधिजिगापयिषा = अध्यापनेच्छा को आक्षिप्त करता हुआ, हटाता हुआ बज रहा था। अर्थात् प्रयाणपटह के घोर गर्जन से विप्रों का अध्यापनकर्म बाधित हो गया था।।57।।

52. अस्तेर्भूः- भवितव्यम्। 53. ब्रुवो वचिः- वक्तृभिः। 54. चक्षिङः ख्याञ्- आख्यात1णाम्।

भवितव्यमनालोच्य वक्तृभिस्सह रावणः।
आख्यात1णां प्रियं कृत्वा गन्तुं सस्मार पुष्पकम्॥58॥

अन्वयः– रावणः वक्तृभिः सह भवितव्यम् अनालोच्य आख्यात1णां प्रियं कृत्वा गन्तुं पुष्पकं सस्मार।

अर्थ– रावण ने (कार्तवीर्य-सम्बन्धी वृत्तान्त के) वक्ता गुप्तचरों के साथ भवितव्य (होनहार) का विचार किए बिना ही आख्याताओं = वृत्तान्त बताने वाले चरों का प्रिय करके (उन्हें पारितोषिकादि देकर) प्रस्थान करने के लिए पुष्पक विमान का स्मरण किया।।58।।

तमर्जुनमहं हन्मि मत्तोऽसौ न बिभेति यः।
इति निश्चिय चित्तेन त्वरयागाद्दशाननः॥59॥

अन्वयः– अहं तम् अर्जुनं हन्मि, यः असौ मत्तः (मत्) न बिभेति। इति चित्तेन निश्चित्य दशाननः त्वरया अगात्।

अर्थ– मैं उस अर्जुन को अभी मार डालता हूँ, जो मत्त (मतवाला या पगलाया हुआ) (मेरे से) नहीं डरता है। चित्त से इस प्रकार का निश्चय कर वह रावण शीघ्र ही चल पड़ा।।59।।

सैन्यमास्थात् पुरो मार्गमदात्तस्मै घनव्रजः।
घर्माम्भोऽपान्मरुत्तस्य शुभश्चाभूद्दिवाकरः॥60।

अन्वयः– सैन्यं पुरः अस्थात्, घनव्रजः तस्मै मार्गम् अदात्। मरुत् तस्य घर्माम्भः अपात्, दिवाकरः च शुभः अभूत्।

अर्थ– सेना उसके सामने थी, मेघमण्डल ने उसे मार्ग दे दिया। (आकाश में से जाने का रास्ता साफ कर दिया)। वायु ने उसके स्वेदजल को पी लिया तथा सूर्य भी उस (रावण) के लिए शुभ (सुखदायक, अनुकूल) हो गया।।60।।

78. विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः- घ्रा- आघ्राद्, आघ्रासीत्। धेट्- अधात्, अधासीत्। अच्छात्, अच्छासीत्।

सा- अवासात्, अवासासीत्।

आघ्रादसौ शुभं गन्धं चाटुकारानिलाहृतम्।
यमाघ्रासीदलिव्रातः पुष्पकामोदवाहनः।।61।।

अन्वयः— असौ चाटुकारानिलाहृतं शुभं गन्धम् आघ्रात्, यं पुष्पकामोदवाहनः अलिव्रातः आघ्रासीत्।

अर्थ— उसने चाटुकार वायु द्वारा लाई शुभ गन्ध को सूंघा, जिसे पुष्पकामोद से आकर्षित भ्रमरवृन्द सूंघ रहा था।।61।।

यदीयपुष्पकालम्बिपुष्पमालालयं मधु।
अधासीन्मधुहृत्पङ्क्तिरच्छासीदात्मनस्तृषम्।62।

अन्वयः— यदीय-पुष्पकालम्बि-पुष्पमालालयं मधु मधुहृत्पङ्क्तिः अधासीत्, आत्मनः तृषम् अच्छासीत्।

अर्थ— उस (रावण) के पुष्पक विमान पर आलम्बित पुष्पमालाओं में स्थित मधु (मकरन्द) को मधुहृत् = भौरों की श्रेणी ने पिया तथा अपनी प्यास बुझाई।।62।।

सैन्यवेग-मरुद्भिन्नपयोधि-जलशीकरान्।
अधाद्यो जलदव्रातः सोऽच्छाद्वर्षञ्जगत्तृषम्।63।

अन्वयः— यः जलदव्रातः सैन्यवेगमरुद्भिन्न-पयोधिजलशीकरान् अधात्, स वर्षन् जगत्तृषम् अच्छात्।

अर्थ— जिस जलदव्रात = मेघसमूह ने सैन्य के वेग के कारण चली वायु से छिटके जलशीकरों = फुहारों को पिया था, उसने बरसते हुए जगत् की तृषा को नष्ट कर दिया।।63।।

यानवेगानिलः सर्पन्नवासाद्यां द्रुमावलिम्।
सा पतन्ती निजच्छायामवासासीत् पतत्फला।64।

अन्वयः— सर्पन् यानवेगानिलः यां द्रुमावलिम् अवासात्, पतन्ती पतत्फला सा निजच्छायाम् अवासासीत्।

अर्थ— सरपट दौड़ते हुए यान-वेग ने जिस द्रुमावली को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था, धराशायी बना दिया, गिरते फलों वाली उस द्रुमावली ने धरती पर गिरते हुए अपनी छाया को समाप्त कर दिया था।।64।।

79. तनादिभ्यस्तथासोः- त- अतत। थास्- मा तथाः।
त- अतनिष्ट। थास्- मा तनिष्ठाः।

अततान्भोदगम्भीरं यं सेना पटहध्वनिम्।
सोऽब्रवीदिति नादेन मा तथा समरं स्वयम्।65।

अन्वयः— सेना अम्भोदगम्भीरं यं पटहध्वनिम् अतत, स नादेन 'स्वयं समरं मा तथाः' इति अब्रवीद् (इव)।

अर्थ— सेना ने जिस मेघ-गम्भीर पटहध्वनि को विस्तारित किया था, वह मानो नाद के बहाने रावण को यह कह रही थी कि स्वयं (अपनी ओर से) युद्ध की पहल मत करो।।65।।

अतनिष्ट मदस्रावं गजता यत्र तामिव।
नातिमात्रं तनिष्ठास्त्वं भृङ्गालीति रुतैर्जगौ।।66।।

अन्वयः— यत्र गजता मदस्रावम् अतनिष्ट। तां भृङ्गाली रुतैः अतिमात्रं मा तनिष्ठाः इति इव जगौ।

अर्थ— उस सेना में गजता (गज-समूह) ने मदस्राव किया। मदगन्ध से आकृष्ट भ्रमरावली ने उसके ऊपर मण्डराते हुए गुञ्जन के बहाने से मानो यह कहा कि तुम अतिमात्र (अत्यधिक) मदस्राव मत करो।।66।।

●

(क्रमशः)